लेखक

डॉ. योगेशचंद्र मिश्र

४भ, २६ जवाहर नगर

जयपुर (राजस्थान)

प्रकाशक

श्री पीताम्बरा ज्ञानपीठम् संस्थान

जयपुर (राजस्थान)

पक्षिराज अर्चनम्

लेखक

डॉ. योगेशचंद्र मिश्र

४भ, २६ जवाहर नगर

जयपुर (राजस्थान)

प्रकाशक

श्री पीताम्बरा ज्ञानपीठम् संस्थान

जयपुर (राजस्थान)
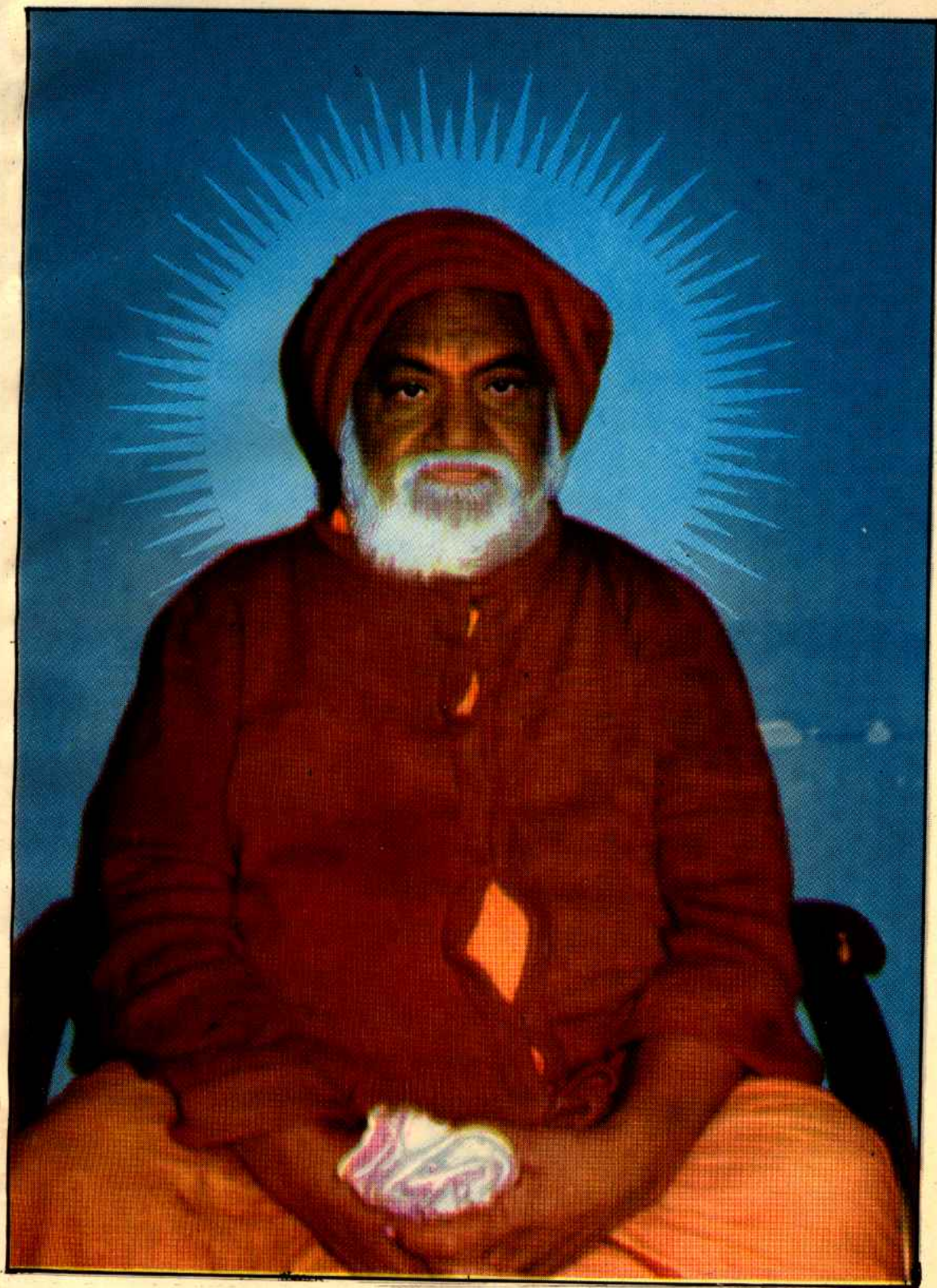
ब्रह्मलीन
श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु परमपूज्य श्री १००८ श्री स्वामी जी महाराज, वनखण्डेश्वर, दतिया (म०प्र०)

भूमिका

अथ ध्यानम् –

अष्टांघ्रिश्च सहस्त्रबाहुरनलच्छाया शिरोयुग्धृग्।
यस्त्र्यक्षो द्विखुरप्र पुच्छउदितः साक्षान्नृसिंहासनः।।
अर्धेनापि मृगाकृतिः पुनरथाप्यर्धेन पक्ष्याकृतिः।
श्री वीरः शलभः स पातु शलभश्चिन्त्यः सदा मां हृदि।।

त्रिविध ताप पीड़ित आज का मानव पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति हेतु इस संसार में यत्र-तत्र भटक रहा है। प्रवृत्ति एवं तत्पश्चात निवृत्ति हेतु जगतसृष्टा पंचवक्र भगवान शिव ने अनगिनत विद्याओं का गूढ़ विज्ञान जन-कल्याण हेतु साधन आगम रूप में प्रदान किया है। आर्य वाङमय अन्तर्गत आकाश भैरव साधना तन्त्र शास्त्र में मूर्धन्य स्थान पर अधिष्ठित है। यह तथ्य तन्त्र साधकों से छुपा हुआ नहीं है।

प्रातः स्मरणीय राष्ट्र-गुरु सर्व तन्त्र स्वतन्त्र श्री पीताम्बरा पीठाधीश्वर श्री अनन्त श्री स्वामी जी महाराज ने श्री शरभेश्वर सम्बंधित निग्रह-दारूण-सप्तक एक विलक्षण स्तोत्र की अत्यन्त ओजस्वी, परम रहस्यमयी टीका साधक-कल्याण हित को ध्यान में रखकर तन्त्र शास्त्र में एक नूतन बहुमूल्य रत्न जड़ दिया है। बाह्य शत्रु के हनन की भावना सब के ही मन में उद्वेलित होती रहती है, परन्तु साधना का पर्यावसान आन्तरिक शत्रुओं के दमन, शान्ति की खोज एवं दुःख की आत्यन्तिक निवृत्ति में है। षट्-कर्मों का प्रयोग आत्मोत्थान के सोपानों के निर्माण में प्रबुद्ध साधकों को करना विहित है। यत्र-तत्र स्थिति गाम्भीर्य में स्वधर्म रक्षा, राष्ट्रहित एवं लोक-कल्याण हेतु इनका प्रयोग मनीषियों ने बाह्य शत्रुओं के दमन हेतु भी किया है। भगवान शरभ के प्रादुर्भाव की कथा संक्षेप में इस प्रकार हैं – विश्व विजयी हिरण्यकश्यपु के संहार पश्चात् जब

भगवान श्री नृसिंह उन्मादवश इस संसार का विनाश करने को उद्युत हुए तब प्राणि-मात्र की रक्षार्थ भगवान सदाशिव ने पक्षिराज रूप में अवतरण किया और नृसिंह की त्वचा खींच कर बाघम्बर के रूप में धारण कर ली एवं उनके तेज को अपने में संवरण कर लिया।

लोक कल्याणार्थ भगवान शिव ने ही आकाश भैरव, आशु गरुड तथा शरभेश्वर रूप में भक्त-त्राण हित अवतार धारण किया। श्री शरभेश्वर ही शरभ – शालुव-पक्षिराज रूप में जाने जाते है।

'आकाश भैरव कल्प एवं शरभ तंत्र' (पीताम्बरा-पीठ) अद्य उपलब्ध प्रकाशित ग्रन्थ है जिनमें क्रिया-प्रयोग सामग्री-बाहुल्य के कारण सामान्य साधकों के लिए भगवान पक्षिराज का पूजन -अर्चन सुगम नहीं है, इसको ध्यान में रखते हुए उपलब्ध ज्ञानानुसार इस लघु पूजा-पद्धति का संकलन एक पुस्तिका के रूप में दिया जा रहा है। करन्यास, षडङ्गन्यास, मन्त्र पदन्यास एवं मन्त्र वर्णन्यास, विशेष दृष्टव्य हैं। प्रकरण की पूर्ति को समक्ष रखते हुए भगवान श्री पक्षिराज का पंचांग भी दे दिया गया है।

भगवान शिव के इस अद्‌भुत रूप का ध्यान उपदेश विराट पुरुष की तरफ संकेत करता है। सूर्य, चन्द्र एवं अग्नि तीन प्रकाशमय ज्योतियाँ ही तीन नेत्र हैं। नखों का वज्रमय होना भोग सम्पादन की पराकाष्ठा को बताता है। लहलहाती हुई उग्र जिव्हा मुण्डक में वर्णित कर्मफल प्राप्त करानेवाली अग्नि की सप्त जिह्वाओं का ज्ञान कराती हैं। कर्मफल को प्राप्त कराने वाली इन सप्त जिह्वाओं का ज्ञान एवं तत्-तत् कर्मफल पूर्ति के हेतु तत्-तत् जिह्वा में विशिष्ट द्रव्यों द्वारा हवन लक्ष्यपूर्ति में वांछनीय है। परमा शक्ति के दो महामहिमामय स्वरूप काली एवं दुर्गा ही भगवान श्री शरभेश्वर के दो पक्ष हैं। अनन्त-अनादि काल जिस महाशक्ति में विश्राम को प्राप्त होता है, अर्थात् जो काल की नियामिका है, वह कालीशक्ति भगवान श्री शरभ का एक पंख है। दुर्गति का विनाश करने वाली दैत्यसंहारक सर्वाभीष्टों की पूर्ति कराने वाली श्री दुर्गा, जिसका

दूसरा पंख है। हृदय रूपी जठर में जिनके वाडवाग्नि रूपी अग्नि (जिसका अग्नित्व जल में भी सदैव बना रहता है) सदैव आश्रित रहती है। नित्य उद्यमशील होने से यह भैरव रूप है। पापियों के दण्ड हेतु व्याधि एवं मृत्यु जिनके दो उरु हैं ऐसे भगवान शरभ अज्ञानमूल के निवर्तक, सर्वश्रेष्ठ हैं। आकाशवद् व्यापनशील होने के कारण अपने 'खं' बीज को सार्थक करते हुए जो खग हैं। भक्तों की रक्षार्थ शीघ्रगामी होने के कारण वे चण्डवातऽतिवेग: विशेषण से युक्त हैं। कामक्रोधादि सर्वशत्रुओं के संहारक पक्षिणां अर्थात् जीवानाम् राजा होने के कारण वे पक्षिराज कहलाते हैं। अत्यन्त शोभावान होने के कारण वे शालुव हैं अथवा शत्रुओं को दुर्बलता सम्पादन कराने के कारण वे सालुव भी कहे जाते हैं। सर्वोत्त्कर्षेण होने के कारण उनकी जय-जयकार है। अध्यात्म साधना में तत्त्व साक्षात्कारांतर्गत कामरूपी शत्रु के प्रधानत्व का वर्णन अत्याधिक दृष्टव्य है। भगवान शिव द्वारा अपने रुद्र रूप का परिचय देते हुए कामदहन अत्यन्त प्रसिद्ध है। जगद्गुरु भगवान श्रीकृष्ण द्वारा समाधि में विघ्न डालने वाले काम को मार डालने का उद्देश्य अर्जुन को श्रीमद्भगवत गीता के तृतीय अध्याय 'कर्मयोग' के अंतिम श्लोक में इस प्रकार दिया गया है –

एवं बुद्धेः परं बुध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।।

इसी को अभिलक्ष्य करते हुए निग्रह दारुण सप्तक के प्रथम श्लोक (कोपोद्रेकाति निर्यन्-निखिलपरिचरत् ताम्रभार प्रभूतम) का उपक्रम हुआ है।

ऐसे विलक्षण स्वरूप वाले भगवान पक्षिराज साधक का कल्याण करें।

पूज्यपाद के श्रीचरणों का यह प्रसाद अनुभव की दीर्घ विषम जीवनयात्रा रूपी पगडंडियों में सफलता से अलंकृत साधक जगत में वितरण हेतु प्रशंसनीय पं. श्री शिवनाथ जी शर्मा द्वारा श्री पीताम्बरा ज्ञानपीठम् संस्थान, जयपुर अन्तर्गत प्रकाशित किया जा रहा है। उन्हें अनेकों साधुवाद।

– *विद्वद्जन चरणानुगत*

योगेशचन्द्र मिश्र

पक्षिराज अर्चनम्

विषयानुक्रमणिका

विषय		पृष्ठ संख्या

शरभ पूजा पद्धति

प्रातः समुत्थाय साधकेन्द्रो श्री गुरुं स्वसहस्त्रार पद्मे ध्यायेत् यथा–

ध्यानम् –

ब्रह्मस्थान सरोज मध्य विलसच्छीतांशु पीठस्थितं ।
स्फूर्ज्जत्सूर्यरूचिं वराभयकरं कर्पूर कुन्दोज्ज्वलं।।
श्वेतस्त्रग्वसनानुलेपनयुतं विद्युद्रुचाकान्तया।
संश्लिष्टार्द्धतनुं प्रसन्नवदनं वन्दे गुरुं सादरम्।।

पञ्चोपचारैः मानसैः सम्पूज्य, गुं गुरुभ्यो नमः श्री गुरुपादुका मन्त्रेण यथा गुरोपदेशानुसार जपं कृत्वा, श्री शरभेश्वरस्य ध्यानं कुर्यात् –

ध्यानम् –

चन्द्रार्काग्निस्त्रिदृष्टिः कुलिशवर-नखश्चञ्चलोऽत्युग्रजिह्वः।
काली दुर्गा च पक्षौ हृदय जठरगो भैरवो वाडवाग्निः।।
उरुस्थौ व्याधि मृत्यु शरभवरखगश्चण्ड वातातित वेगः।
संहर्ता सर्वशत्रून् सजयति शरभ : शालुव : पक्षिराज :।।

पञ्चोपचारैः मानसैः सम्पूज्य, मूल मन्त्रं अष्टोत्तर शतं जप्त्वा, श्री गुरु एवं इष्ट भावनाया एकीकृत्य, प्रणम्य श्री शरभेशाऽष्टक स्तोत्रं त्रिवारं पठेत्

अथ पूजन विधि

ततः नित्यक्रिया स्नानादि कुर्यात् तत्पश्चात् पूजाग्रहं गत्वा द्वारदेवता सम्पूज्य यथा –

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं भद्रकाल्यै नमः। द्वारस्य दक्ष शाखायां
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं भं भैरवाय नमः। द्वारस्य वाम शाखायां
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं लंबोदराय नमः। द्वारस्य ऊर्ध्व शाखायां

इति तिस्रो द्वारदेवता सम्पूजयेत् – आसनमास्तीर्य

"ॐ ह्रीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः"
इत्यासनं सम्पूज्य, उपविश्य, त्रय कुशातन्तून् आसनोपरि दद्यात्

ॐ अनन्तासनाय नमः, ॐ विमलासनाय नमः, ॐ पद्मासनाय नमः

तत्पश्चात् आसन का निम्न प्रकार से शोधन करें।

आसन पवित्र करने विनियोग – जल छोड़े।

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं।
छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।।

नीचे लिखे मन्त्र से आसन पर जल के छींटे दे।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः

नीचे लिखे मन्त्र से आसन को प्रणाम करे।

ॐ कूर्मासनाय नमः। ॐ योगासनाय नमः।
ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै कमलासनाय नमः।
ॐ दुष्टविद्रावण नृसिंहासनाय नमः।।

हृदिपवित्र करने विनियोग –

ॐ अपवित्रः पवित्रोवेत्यस्य वामदेव ऋषिः विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। जल छोडे।

पवित्र-करण-मन्त्र –

नीचे लिखे मन्त्र से शरीर पर जल छिड़कें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

शिखाबन्धन –

शिखा बांधकर सभी कर्म करने चाहिये। इसलिये नीचे लिखे मन्त्र से या गायत्री मन्त्र से शिखा बांधे। यदि शिखा न हो तो शिखा के स्थान का स्पर्श करे।

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवी शिखामध्ये तेजो वृद्धि कुरुष्व मे।।

दिग्बन्धनम् –

ॐ सर्वभूत-निवारकाय शार्ङ्गाय सशराय।
सुदर्शनाय अस्त्रराजाय हुं फट् स्वाहा।।

मन्त्र बोलते हुए अस्त्रमुद्रा से अपने चारों ओर चुटकी बजाकर अन्त में तर्जनी और मध्यमा अंगुली से बाएं हाथ की हथेली से ताली बजाये तथा अपने चारों ओर अग्नि का परकोटा बना है ऐसी भावना करे।

तत्पश्चात् –

गुं गुरुभ्यो नमः (दाहिनी ओर)
गं गणपतये नमः (बायीं ओर)

तथा श्री लक्ष्मी देव्यै नमः (अपने सामने) बोलते हुए प्रणाम करे।

भैरव नमस्कार एवं पूजा के लिये आज्ञा प्राप्ति –

ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय, कल्पान्तदहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि।।
श्री भैरवाय नमः।

उक्त लिखित मन्त्र बोलकर श्री बटुक भैरव को प्रणाम करे तथा पूजा कर्म की आज्ञा प्राप्त करे।

आचमनम् –

ॐ श्रीं आत्मतत्वं शोधयामि नमः।
ॐ श्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः।
ॐ श्रीं शिवतत्वं शोधयामि नमः।
ॐ श्रीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः।

ध्यानम् –

मृगस्त्वर्द्ध शरीरेण पक्षाभ्यां चञ्चुनाद्विजः।
अधोवक्त्र : चतुष्पाच्च उर्ध्ववक्त्रश्चतुर्भुजः।
कालाग्नि दहनोपेतो नील जीमूत सान्निभः।
अरिस्तद्दर्शनादेव विनष्ट बल विक्रम ।

गुं गुरुभ्यो नमः – वामकर्णे
गं गणपतये नमः – दक्षकर्णे
क्षं क्षेत्रपालाय नमः – पृष्ठे
श्री शरभेश्वराय नमः – सर्वाङ्गे

एवं ध्यात्वा मानसोपचारै सम्पूज्य पक्षिराजं गायत्र्यष्टोत्तर शतं जपेत् –

पक्षिराजाय विद्महे शरभेश्वराय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात।

इति जपित्वा चन्दनादिना चतुरस्त्रं विलिख्य हस्ताभ्याँ मत्स्य मुद्रया ऊर्ध्वमुखी त्रिकोण, अष्टदल, द्वादशदल, षोडषदल, भूपूर द्वन्द्वात्मकं चक्र मुद्धृत्य मन्त्रेण देवमावह्य पूजयित्वा।

संकल्पः

मूलेन प्राणानायम्य, देशकालौ संकीर्त्य संकल्पम् कुर्यात् ।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्‌भगवते महापुरुषस्य विष्णुराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गते अमुक पुण्य क्षेत्रे अमुक नगरे अमुक स्थाने अमुक मन्दिरे शालिवाहन कृते शके विक्रम सम्वत्सरे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक राशि स्थिते सूर्ये अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथाराशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं गुण विशेषेण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुक शर्मा/ गुप्ता / दासोऽहं श्री शरभेश्वर देवता प्रीत्यर्थं सर्वारिष्ट निवृत्तिपूर्वक सर्वाभीष्ट फल प्राप्त्यर्थं पूजनम् करिष्ये।

अथ भूत शुद्धिः

श्वास समीरं पिङ्गलया नाड्यान्तराकृष्य –

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मूल शृङ्गाटकात् सुषुम्णापथेन जीव
शिवं परम शिवपदे योजयामि स्वाहा।

इति मन्त्रेण मूलाधारस्थितं जीवात्मानं सुषुम्णावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रम् नीत्वापरमशिवेनैकीभूतं विभाव्य इड्यावायुं रेचयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं यं १६ इड्या पूरयित्वा संकोच शरीरं
शोषय शोषय स्वाहा।

इति निज शरीरं शोषितं विभाव्य पिङ्गलया रेचयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं रं १६ पिङ्गलया पूरयित्वा संकोच
शरीरं दह दह पच पच स्वाहा।

इति प्लुष्टं भस्मीकृतं च विभाव्य इड्या रेचयेत्।

ॐ ऐं ह्री श्रीं वं १६ इड्या पूरयित्वा परमशिवामृतं
वर्षय वर्षय स्वाहा।

इति तद्भस्म सहस्रारेन्दुमण्डल विगलदमृत रसेन सिक्तञ्च विभाव्य पिङ्गलया रेचयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं लं १६ पिङ्गलया पूरयित्वा शाम्भव
शरीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा।

इति तद्भस्मनो दिव्यं शरीरमुत्पन्न विभाव्य इड्या रेचयेत्।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः सोहं इड्या पूरयित्वा अवतर-अवतर शिवपदाज्जीवं? सुषुम्णा पथेन प्रविश मूल श्रृंगाटकं उल्लसोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोहं स्वाहा।

इति परमशिवेनैकी कृतं जीवं पुनः सुषुम्णा वर्त्मना मूलाधारे स्थापितं विचिन्तयेत्

इति भूत शुद्धिः।

अथात्मनः प्राण प्रतिष्ठां कुर्यात्

इस प्रकार देह का संशोधन कर अपने हृदय पर दाहिना हाथ रखकर निम्न मन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा करे –

हृदि दक्ष करतलं निधाय –

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सोहं हंसः मम प्राणाः इह प्राणाः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सोहं हंसः मम जीव इह जीवः स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं सोहं हंसः मम सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि।

ततः त्रिः प्राणानायम्य, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भुवि संस्थिताः।
ये भूता विघ्न कर्तारस्तेनश्यन्तु शिवाज्ञया।।

इति युगपद्वाम पार्ष्णिना भूतलाघातत्रय क्रूर-दृष्टयव लोकन पूर्वकं तालत्रयेण भौमान्तरिक्ष दिव्यान् विघ्नघ्नानुनुत्सार्य ॐ नमः इति मन्त्रमुच्चरन् अङ्कुश मुद्रया शिखां बद्ध्वा श्री शरभदेव रूपमात्मानं भावयन् स्वदेहे न्यास जालात्मक वज्र कवचं च विदधीत।

अथ न्यास विधिं

अथ मातृका न्यासः

विनियोग –

अस्य श्री अथ मातृकान्यास मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं मम शरीर शुद्ध्यर्थं जपे न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास – ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि
ॐ इं गायत्री छन्दसे नमः ईं मुखे
ॐ उं सरस्वती देवतायै नमः ऊं हृदये
ॐ एं हलभ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये
ॐ ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः ऐं गुह्ये
ॐ ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः
ॐ अं अव्यक्त कीलकाय नमः अः अञ्जलौ।

करन्यास – ॐ अं कं खं गं घं ङं आंअंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः
ॐ उं टं ठं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः
ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्गन्यास – ॐ अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः
ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा
ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्
ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं
ॐ ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः
अस्त्राय फट्।

अथ अन्तर्मातृका न्यासः

आधारे लिंगनाभौ प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे।
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के।।
वासान्ते बालमध्ये डफकठ सहिते कण्ठदेशे स्वराणाम्।
हं क्षं तत्वार्थ चिन्त्यं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि।।

मानसोपचारै सम्पूज्य

लं पृथिव्यात्मकं गंधं समर्पयामि
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि
यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि
रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि

कण्ठे विशुद्धि चक्रे – अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं
एं ऐं ओं औं अं अः।
हृदये अनाहत चक्रे – कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं।
नाभौ मणिपूरे – डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं।

स्वाधिष्ठाने – बं भं मं यं रं लं।

मूलाधारे – वं शं षं सं

भ्रूमध्ये आज्ञा चक्रे – हं क्षं विन्यसेत्।

।। इति अन्तर्मातृकान्यासः।।

बहिर्मातृकान्यासः

विनियोग –

ॐ अस्य श्री बहिर्मातृकान्यासस्य ब्रह्माऋषि गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता हलो बीजानि स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकं न्यासे विनियोगः। अकारादि क्षकारान्तमातृकावर्णैः स्वदेहे व्यापकं कुर्यात्।

ध्यानम् –

अर्द्धोन्मुक्त शशांककोटि सदृशीमापीन तुङ्गस्तनीं।
चन्द्रार्द्धाङ्कित शेखरां मधुदलैरालोल नेत्रत्रयाम्।।
विभ्राणामनिशं वरं जपवटीं शूलं कपालं करै।
राद्यां यौवन गर्वितां लिपितनुं वागीश्वरीमाश्रये।।

ॐ अं नमः शिरसि ॐ आं नमः मुखे
ॐ इं नमः दक्षनेत्रे ॐ ईं नमः वामनेत्रे
ॐ उं नमः दक्षकर्णे ॐ ऊं नमः वामकर्णे
ॐ ऋं नमः दक्षनासापुटे ॐ ॠं नमः वामनासापुटे
ॐ लृं नमः दक्ष गण्डे ॐ लॄं नमः वाम गण्डे
ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे

ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ॐ औं नमः अधोदन्तपंक्तौ
ॐ अं नमः मुखवृत्ते ॐ अः नमः कण्ठे
ॐ कं नमः दक्षिण बाहुमूले ॐ खं नमः दक्षकूर्परे
ॐ गं नमः दक्षिण मणिबन्धे ॐ घं नमः दक्षाङ्गुलिमूले
ॐ ङ नमः दक्षाङ्गुल्यग्रे ॐ चं नमः वाम बाहुमूले
ॐ छं नमः वामकूर्परे ॐ जं नमः वाम मणिबन्धे
ॐ झं नमः वामाङ्गुलिमूले ॐ ञं नमः वामाङ्गुल्यग्रे
ॐ टं नमः दक्ष पादमूले ॐ ठं नमः दक्ष जानुनि
ॐ डं नमः दक्ष गुल्फे ॐ ढं नमः दक्ष पादांगुलिमूले
ॐ णं नमः दक्ष पादाङ्गुल्यग्रे ॐ तं नमः वाम पादमूले
ॐ थं नमः वाम जानुनि ॐ दं नमः वाम गुल्फे
ॐ धं नमः वाम पादाङ्गुलिमूले ॐ नं नमः वाम पादाङ्गुल्यग्रे
ॐ पं नमः दक्ष पार्श्वे ॐ फं नमः वाम पार्श्वे
ॐ बं नमः पृष्ठे ॐ भं नमः नाभौ
ॐ मं नमः जठरे ॐ यं नमः हृदि
ॐ रं नमः दक्षांसे ॐ लं नमः ककुदि
ॐ वं नमः वामांसे ॐ शं नमः हृदयादिदक्ष करान्तम्।

ॐ षं नमः हृदयादिवाम करान्तम्।
ॐ सं नमः हृदयादिदक्ष पादान्तम्।
ॐ हं नमः हृदयादिवाम पादान्तम्।
ॐ लं नमः मस्तकादि पादान्तम्।
ॐ क्षं नमः पादादि शिरोन्तम्।

स्व शरीरे पीठ न्यासं कुर्यात्।

१) मूलाधारे मण्डूकाय नमः
२) स्वाधिष्ठाने कालाग्नि रुद्राय नमः
३) मणिपूरे कूर्माय नमः
४) हृदये –
i) ॐ आधार शक्तये नमः ii) अनन्ताय नमः
iii) पृथिव्यै नमः iv) क्षीर समुद्राय नमः
v) श्वेत द्वीपाय नमः vi) मणि मण्डपाय नमः
vii) कल्प वृक्षाय नमः viii) मणि वेदिकायै नमः
ix) रत्न सिंहासनाय नमः
५) दक्षिण स्कन्धे धर्माय नमः
६) वाम स्कन्धे ज्ञानाय नमः
७) वामौरौ वैराग्याय नमः
८) दक्षोरौ ऐश्वर्याय नमः
९) मुखे अधर्माय नमः
१०) वाम पार्श्वे अज्ञानाय नमः
११) नाभौ अवैराग्याय नमः
१२) दक्ष पार्श्वे अनैश्वर्याय नमः
१३) पुनर्हृदि –
i) अनन्ताय नमः ii) पद्माय नमः
iii) अं सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने नमः
iv) ओं चन्द्र मण्डलाय षोडश कलात्मने नमः
v) मं वह्नि मण्डलाय दश कलात्मने नमः

vi) सं सत्वाय नमः, vii) रं रजसे नमः,
viii) तं तमसे नमः ix) आं आत्मने नमः
x) अं अन्तरात्मने नमः xi) पं परमात्मने नमः
xii) ह्रीं ज्ञानात्मने नमः

हृतपद्मस्थ केशरेषु प्रागादि प्रादक्षिण्येन

xiii) वामायै नमः, xiv) ज्येष्ठायै नमः
xv) रौद्रायै नमः, xvi) काल्यै नमः
xvii) कल विकिरिण्यै नमः, xviii) बल विकिरिण्ये नमः
xix) बल प्रमाथिन्यै नमः, xx) सर्व भूत दमिन्यै नमः

मध्ये – मनोन्मन्यै नमः

तदुपरि – ॐ नमो भगवते सकल गुणात्म शक्ति युक्तायाअनन्त योग पीठात्मने नमः

अथ श्री कण्ठादिन्यासः

श्री कण्ठादि मातृ कायाः दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्री छन्दः अर्द्धनारीश्वरो देवता हलो बीजानी स्वराः शक्तयः इति
स्मृत्वा यथा स्थानं न्यस्य

ह्नां अंगुष्ठाभ्यां नमः ह्नीं तर्जनीभ्यां नमः
ह्नूं मध्यमाभ्या नमः ह्नैं अनामिकाभ्या नमः
ह्नौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ह्नः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः
एवं हृदयादि!

ततो ध्यानम् –

पाशांकुश वराक्षसृक वाणी शीतांशु शेखरम्।
त्र्यक्ष रक्त सुवर्णाभमर्द्ध नारीश्वरं भजे।।

इति ध्यात्वा न्यसेत्।

हृनौं अं श्री कण्ठेश पूर्णोदरीभ्यां नमः ललाटे।
हृनौं आं अनन्तेश विरजाभ्यां नमः मुखवृत्ते।
हृनौं इं सूक्ष्मेश शाल्मलीभ्या नमः दक्षनेत्रे।
हृनौं ईं त्रिमूर्तीश लोलाक्षीभ्यां नमः वामनेत्रे।
हृनौं उं अमरेश वर्तुलाक्षीभ्यां नमः दक्षकर्णे।
हृनौं ऊं अर्घ्रीश दीर्घ घोणाभ्यां नमः वाम कर्णे।
हृनौं ऋं भार भूतेश दीर्घ मुखीभ्यां नमः दक्ष नासे।
हृनौं ॠं तिथीश गोमुखीभ्यां नमः वाम नासे।
हृनौं लृं स्थाण्वेश दीर्घजिह्वाभ्यां नमः दक्षगण्डे।
हृनौं लॄं हरेश कुण्डोदरीभ्यां नमः वामगण्डे।
हृनौं एं भिन्टीशोर्ध्व केशीभ्यां नमः ओष्ठे।
हृनौं ऐं भौति केश विकृत मुखीभ्यां नमः अधरोष्ठे।
हृनौं ओं सद्योजातेश ज्वालामुखीभ्यां नमःऊर्ध्व दन्तपंक्तौ।
हृनौं औं अनुग्रहे शोल्कामुखीभ्यां नमः अधोदन्तपंक्तौ।
हृनौं अं अक्रूरेश श्री मुखाभ्यां नमः मुर्ध्नि।
हृनौं अः महासेनेश विद्या मूखीभ्यां नमः मुखे।
हृनौं कं क्रोधेश महाकालीभ्यां नमः दक्ष बाहु मूले।
हृनौ खं चण्डेश सरस्वतीभ्यां नमः कूर्परे।
हृनौं गं पञ्चान्तक सर्वेश सिद्धि गौरीभ्यां नमः मणि बन्धे।
हृनौं घं शिवोत्तमेश त्रैलोक्य विद्याभ्यां नमःअंगुलिमूले।
हृनौं ङ एक रुद्रेश मन्त्र शक्तिभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे।
हृनौं चं कूर्मेशात्म शक्तिभ्यां नमः वाम बाहू मूले।
हृनौं छं एक नेत्रे श भूत मातृभ्यां नमः कूर्परे।
हृनौं जं चतुराननेश लम्बोदरीभ्यां नमः मणिबन्धे।
हृनौं झं अजेश द्राविणीभ्या नमः अङ्गुलिमूले।

ह्नौं ञं सर्वेश नागरीभ्यां नमः अङ्गुल्यग्रे।
ह्ना टं सोमेश खेचरीभ्यां नमः दक्षपाद मूले।
ह्नौं ठं लङ्गलीश मञ्जरीभ्या नमः जानुनी।
ह्नौं डं दारुकेश रुक्मणीभ्यां नमः गुल्फे।
ह्नौं ढं अर्द्ध नारीश वीरणीभ्यां नमः अङ्गुलिमूले।
ह्नौं णं उमा कान्तेश काकोदरीभ्यां नमः अंगुल्यग्रे।
ह्नौ तं आषाढ़ीश पूतनाभ्या नमः वाम पाद मूले।
ह्नौ थं चण्डीश भद्रकालीभ्या नमः जानुनि।
ह्नौं दं अत्रीश योगिनीभ्यां नमः गुल्फे।
ह्नौं धं मीनेश शङ्खनीभ्यां नमः अंगुलिमूले।
ह्नौं नं मेषेश तर्जनीभ्यां नमः अंगुल्यग्रे।
ह्नौं पं लोहितेश काल रात्रीभ्यां नमः दक्ष पार्श्वे।
ह्नौं फं शिखीश कुब्जिनीभ्या नमः वामपार्श्वे।
ह्नौं बं छागलण्डेश कपर्दनीभ्या नमः पृष्ठे।
ह्नौं भं द्विरण्डेश वज्राभ्यां नमः नाभौ।
ह्नौं मं महाकालेश जयाभ्यां नमः जठरे।
ह्नौं यं त्वगात्मभ्यां वालीश सुमुखीभ्यां नमः हृदि।
ह्नौं रं असृगात्मभ्यां भुजङ्गेश रेवतीभ्यां नमः दक्षांशे।
ह्नौं लं मांसात्मभ्या पिनाकीश माधवीभ्यां नमः ककुदि।
ह्नौं वं मेद आत्माभ्यां खड्गीश वारुणीभ्यां नमः वामांशे।
ह्नौं शं अस्थ्यात्मभ्यां बकेश वायवीभ्या नमः हृदयादि दक्षकरे।
ह्नौं षं मज्जात्ममभ्यां श्वेतेश रक्षो विदारिणीभ्यां नमः हृदयादि वाम करे।
ह्नौं सं शुक्रात्मभ्यां भृग्वीश सहजाभ्यां नमःहृदयादि दक्ष पादे।

ह्नौं हं जीवात्मभ्यां लकुलीश लक्ष्मीभ्यां नमः हृदयादि वाम पादे।
ह्नौं ळं शक्त्यात्मभ्यां शिवेश व्यापिनीभ्यां नमः नाभौ।
ह्नौ क्षं क्रोधात्मभ्यां संवर्तकेश महामायाभ्यां नमः हृदयादि मुखे।

इति श्री कण्ठादि न्यासः।

मूल मन्त्रः न्यासः
ऋष्यादि-कर-षडङ्गन्यास

विनियोग –

ॐ अस्य श्री शरभेश्वर महामन्त्रस्य कालाग्नि रुद्र ऋषये नमः शिरसि जगती छन्दसे नमः मुखे भगवत्ये शरभ देवतायै नमः हृदि खं बीजाय नमः गुह्ये स्वाहा शक्त्ये नमः पादयो; फट् कीलकाय नमः सर्वाङ्गे स्वेच्छा प्रयोग सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग :

कालाग्नि रुद्र ऋषये नमः शिरसि।
जगती छन्दसे नमः मुखे।
भगवत्यै शरभ देवतायै नमः हृदि।
खं बीजाय नमः गुह्ये।
स्वाहा शक्तये नमः पादयो।
फट् कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।

करन्यास –

ॐ खें खां अं कं खं गं घं ङ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ खं फट् इं चं छं जं भं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः
ॐ प्राण ग्रहासि-प्राण ग्रहासि हुँ फट् ॐ टं ठं डं ढं णं
ॐ मध्यमाभ्यां नमः
ॐ सर्व शत्रु संहारणाय एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ शरभ सालुवाय ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं
क्षं अंः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः

हृदयादि न्यास –

ॐ खें खां अं कं खं गं घं ङ आं हृदयाय नमः।
ॐ खं फट् इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा।
ॐ प्राण ग्रहासि-प्राण ग्रहासि हुं फट् ॐ टं ठं डं ढं णं
ॐ शिखायै वषट्।
ॐ सर्व शत्रु संहारणाय एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुम्
ॐ शरभ सालुवाय ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट्।
ॐ पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं
क्षं अंः अस्त्राय फट्

पदन्यास –

ॐ खें खां ब्रह्मरन्ध्रे
खं फट् केशान्ते
प्राण ग्रहासि भाले
प्राण ग्रहासि हुं फट् आज्ञा चक्रे
सर्व शत्रु संहारणाय विशुद्ध चक्रे
शरभ सालुवाय अनाहत चक्रे
पक्षिराजाय मणिपूरे
हुं फट् स्वाधिष्ठाने
स्वाहा मूलाधारे

वर्णन्यास –

मन्त्र – ॐ खें खां खं फट् प्राण ग्रहासि प्राण ग्रहासि हुं फट् सर्व शत्रु संहारणाय शरभ सालुवाय पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।।

ॐ नमः शिरसि
खें नमः ललाटे
खां नमः भ्रुवो
खं नमः दक्षिण नेत्रे
फट् नमः वाम नेत्रे

प्रा नमः दक्षिण कर्णे
ण नमः वाम कर्णे
ग्र नमः दक्षिण नासापुटे
हा नमः वाम नासापुटे
सि नमः दक्षिण गण्डस्थले
प्रा नमः वाम गण्डस्थले
ण नमः दक्षिण हंसके
ग्र नमः वाम हंसके
हा नमः कण्ठे
सि नमः दक्षिण बाहुमूले
हुं नमः दक्षिण कूर्परे
फट् नमः दक्षिण मणि बन्धे
स नमः दक्ष हस्तांगुलिमूले
र्व नमः दक्ष हस्तांगुल्यग्रे
श नमः वाम बाहुमूले
त्रु नमः कूर्परे
सं नमः वाम मणि बन्धे
हा नमः वाम हस्तांगुलि मूले
र नमः वाम हस्तांगुल्यग्रे
णा नमः दक्षिण स्तने
य नमः वाम स्तने

श नमः दक्षिण पार्श्वे
र नमः वाम पार्श्वे
भ नमः नाभौ
सा नमः लिङ्गे
लु नमः पायु
वा नमः दक्ष पाद मूले
य नमः दक्ष जानूनि
प नमः दक्ष गुल्फे
क्षि नमः दक्ष पादांगुलि मूले
रा नमः दक्षपादांगुल्यग्रे
जा नमः वाम पद मूले
य नमः वाम जानुनि
हुं नमः वाम जानुनि
फट् नमः वाम पादांगुलिमूले
स्वा नमः वाम पादांगुल्यग्रे
हा नमः सर्वाङ्गे।

जलं सम्प्रोक्ष हस्ते गंधाक्षत पुष्पाणि गृहित्वा –

श्री शनैश्चर पूजन यंत्रम्

पीठ पूजां कुर्यात्

मं मण्डूकाय नमः	कं कालाग्नि रूद्राय नमः
अं आधार शक्त्यै नमः	कूं कूर्माय नमः
धं धरायै नमः	सूं सुधा सिन्धवे नमः
श्वें श्वेत द्वीपाय नमः	सुं सुर वृक्षेभ्यो नमः
मं मणिमय हर्म्याय नमः	यं यमपीठाय नमः
ज्ञां ज्ञानाय नमः	वैं वैराग्याय नमः
ऐं ऐश्वर्याय नमः	अं अधर्माय नमः
अः अवैराग्याय नमः	अं अनैश्वर्याय नमः
अं अनन्ताय नमः	तं तत्वमयाम्नाय नमः
आं आनन्द कन्दाय नमः	विं विकारमय केशरेभ्यो नमः
पं प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः	पं पञ्चाशद्वर्ण कर्णिकायै नमः
सं सूर्य कलायै नमः	इं इन्द्र मण्डलाय नमः
पं पावक मण्डलाय नमः	सं सत्वाय नमः
रं रजसे नमः	तं तमसे नमः
अं आत्मने नमः	अं अन्तरात्मने नमः
पं परमात्माने नमः	बं वामा शक्त्यै नमः
जें ज्येष्ठा शक्त्यै नमः	कां कान्ति शक्त्यै नमः
कां कला शक्त्यै नमः	कं कलविकरिण्यै नमः
बं बल विकरिण्यै नमः	बं बल प्रमथिन्यै नमः
सं सर्व दमिन्यै नमः	मं मनो मथिन्यै शक्त्यै नमः

पीठं सम्पूज्य तन्मध्ये ॐ नमो भगवते सकल गुणात्मक शक्ति युक्तायानन्ताय योग पीठात्मने नमः।।

ध्यानम् –

चन्द्रार्काग्निस्त्रि दृष्टिः कुलिश वर नखश्चञ्चलोत्युग्र जिह्वः
काली दुर्गा च पक्षौ हृदय जठर्गो भैरवो वाडवाग्निः।

उरुस्थौ व्याधिमृत्यु शरभ वर खगश्चण्डवातातिवेगः
संहर्ता सर्व शत्रून् स जयति शरभः सालुव पक्षिराजः।।

पुष्पाञ्जलि मानीय हृदय कमल मध्यस्थं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सवाहनं स शूलिनं दुर्गा सहितं श्री शरभेश्वरं यन्त्र मध्ये पुष्पाञ्जलि निक्षिप्य आवहनादि मुद्रां प्रदर्श्य मुलमुच्चार्य आवहनादिं कुर्यात्।

मूलम् – आवाहितोभवः
मूलम् – सन्निहितोभवः
मूलम् – सन्निरुद्धो भवः
मूलम् – अव गुण्ठितो भवः
मूलम् – सकली कृतो भवः

लघु प्राण प्रतिष्ठा

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं हं सः सोऽहं
श्री शरभ सालुवस्य प्राणा इह प्राणा।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोऽहं
श्री शरभ सालुवस्य जीव इह स्थित।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोऽहं
श्री शरभ सालुवस्य सर्वेन्द्रियाणि इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोऽहं
श्री शरभ सालुवस्य वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः

श्रोत्रजिह्वा घ्राण पाणि पाद पायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।

अथ पात्रावसादनम्

अथ सामान्यऽर्ध्य स्थापनम्

यंत्रोपरि पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा, स्व वामभागे सामान्यर्घ्य स्थापनं कुर्यात् –

रक्तचन्दनादिना त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्त्र मण्डलम् मत्स्य् मुद्रां निर्माय :

ॐ आधारशक्तये नमः इति गंधादिभि मण्डलम् सम्पूज्य मूलमन्त्रमुच्चार्य श्री शरभेश्वर पूजाया सामान्यर्घ्याधारं स्थापयामि इति अस्त्रक्षालितमाधारं संस्थाप्य मं अग्निमण्डलाय दश कलात्मने नमः

अग्निदशकला –

ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिषे नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं रं ऊष्मायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं लं ज्वलिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं वं ज्वालिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं षं सुश्रियै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं सं सुरूपायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं हं कपिलायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ळं हव्यवाहायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं क्षं कव्यवाहायै नमः।

इति दशा अग्निकलाः सम्पूज्य तन्मध्ये नमः

सामान्यार्घ्यपात्रं अस्त्रप्रक्षालितं सुधूपितं गंधादिभि चर्चितं, अं अर्क-मण्डलाय द्वादश कलाभि सम्पूज्य शरभ सामान्यार्घ्य पात्राय नमः इति संस्थाप्य

अर्कद्वादशकला –

ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्रायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं घं पं मरीच्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं ज्वालिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं चं धं रूच्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं छं दं सुषुम्णायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं बोधिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं धारिण्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं क्षमायै नमः।

इति द्वादश अर्क कलाः सम्पूज्य तस्मिन् पात्रे विलोम मातृकाम् उच्चार्य शुद्ध जलेनापूर्य तीर्थान्यावाह्य –

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन सन्निधं कुरु।।

ॐ इति गंधादिभि सम्पूज्य ॐ सोम मण्डलाय षोडश कलात्मने शरभ कलशामृताय नमः इति सम्पूज्य कर्पूरादि वासितं वर्धनी सलिलमापूर्य क्षीरबिन्दुं दत्वा सोम मण्डलत्वेन संचिंतिते तस्मिन् सलिले पूर्वोक्त क्रमेण –

सोमषोडशकला –

ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं इं पूषायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ईं तुष्ट्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्ट्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रत्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ऋं धृत्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ॠं शशिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं लृं चन्द्रिकायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ॡं कान्त्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्स्नायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रियै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीत्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं औं अङ्गदायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णायै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं अः पूर्णामृतायै नमः।

मूलेन अष्टवार अभिमन्त्र्यं धेनुमुद्रां प्रदर्शय इति सामान्यर्घ्य स्थापनम्।

विशेषार्घ्य स्थापनम्

अथ यंत्रात्मनोर्मध्येः चतुरस्त्र, वृत्त, षटकोण, उर्ध्वमुखी त्रिकोणंविधाय मत्स्य मुद्रया निर्माय, षटकोणे –

अग्निशासुर वायुकोणेषु मध्ये पूर्वादि दिक्षु क्रमेण, षडंगम् पूजयेत्

ॐ हृदयाय नमः – आग्नेय कोणे
ॐ शिरसे स्वाहा – ईशान कोणे
ॐ शिखायै वषट् – नैर्ऋत्य कोणे
ॐ कवचाय हुम् – वायव्य कोणे
ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् – मध्ये
ॐ अस्त्राय फट् – चतुर्दिक्षु

ततः

चतुरस्रे पञ्चरत्नं पूजयेत् –

ग्लूं गगन रत्नाय नमः चतुर्दिक्षु
स्लूं स्वर्ग रत्नाय नमः चतुर्दिक्षु
म्लूं मर्त्य रत्नाय नमः चतुर्दिक्षु
प्लूं पाताल रत्नाय नमः चतुर्दिक्षु
न्लूं नाग रत्नाय नमः मध्ये

ततः

कं कामगिरि पीठाय नमः
पं पूर्ण गिरि पीठाय नमः
जं जालन्धर पीठाय नमः
ॐ उड्डीयान पीठाय नमः

तत्रास्त्रक्षालितं आधारं संस्थाप्य 'मं वह्निमण्डलाय दश कलात्मने शरभार्घ्यपात्राधाराय नमः'। इति निधाय अग्निमण्डलत्वेन विभाविते तस्मिन् स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन –

दश वह्निकला –

ऐं ह्रीं श्रीं यं धूम्रार्चिषे नमः
ऐं ह्रीं श्रीं रं ऊष्मायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं लं ज्वलिन्यै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं वं ज्वालिन्यै नमः
ऐं ह्री श्रीं शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं षं सुश्रियै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं सं सुरूपायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं हं कपिलायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं लं हव्यावाहायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं क्षं कव्यवाहायै नमः

इति दश वह्निकलाः सम्पूज्य।

ऐं अग्नि दूतं वृणीमहे होतारं विश्व वेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।। रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं इत्याधारे अग्निं कलाभिः सम्पूज्य, फट् इति क्षालितं पात्रं 'हुम् ब्रह्माण्ड चर्वकाय स्वाहा' पात्रं प्रक्षाल्य

अं सूर्य मण्डलाय द्वादश कलात्मने शरभार्घ्यपात्राय नमः धूपयित्वा मूलं उच्चार्य आधारोपरि निधाय इति सम्पूज्य स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन –

ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूम्रायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं घं पं मरीच्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं ङ नं ज्वालिन्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं चं धं रुच्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं छं दं सुषुम्णायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदायै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वायै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं बोधिन्ये नमः
ऐं ह्रीं श्रीं टं ढं धारिण्यै नमः
ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं क्षमायै नमः

क्लीं आकृष्णोन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतंमर्त्यञ्च।
हिरण्येन सविता रथेन देवो यति भुवनानि पश्यन्।
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ह म ल व र यूं सूर्य कलाभिः सम्पूज्य।

इति सम्पूज्य विलोममातृकां उच्चार्य कलशामृतेन आपूर्य तत्र शैव अष्टगंध (चंदन, अगरु, तमाल, जल, कुंकुम, कर्पूर, कुक्षीत, कुष्ट) पंकलोलित कुसुमम् निक्षिप्य ॐ सोम मण्डलाय षोडशकलात्मने शरभार्घ्यमृताय नमः। इति सम्पूज्य, सोम मण्डलत्वेन विचिंतिते तत्र षोडशेन्दुकला : संभाव्य –

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृता कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आं मानदा कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इं पूषा कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ईं तुष्टि कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं उं पुष्टि कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऊं रति कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऋं धृति कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॠं शशिनी कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऌं चन्द्रिका कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॡं कान्ति कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एं ज्योत्स्ना कलायै नमः
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्री कलायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ओं प्रीति कलायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं औं अंगदा कलायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं पूर्णा कलायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अः पूर्णामृता कलायै नमः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम ब्रह्मथवा वाजस्य संगथे। सां सीं सूं सैं सौं सः स म ल व र यूं इति षोडश कलाभिः सम्पूज्य।

क्रों इति अङ्कुशमुद्रया दिने सूर्यमण्डले, रात्रौ चन्द्र मण्डले तीर्थान्यावाह्य –

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधं कुरुं।।

स्व हृदयात देवं आवाहय जलं स्पृष्टवा अष्टशो मूल मनुं जपेत्। जलमध्ये षडङ्गानी सम्पूज्य –

ॐ हृदयाय नमः – आग्नेय कोण
ॐ शिरसे स्वाहा – ईशान कोण
ॐ शिखायै वषट् – नैर्ऋत्य कोण
ॐ कवचाय हुम् – वायव्य कोण
ॐ नेत्र त्रयाय वौषट्– मध्ये
ॐ अस्त्राय फट् – चतुर्दिक्षु

पुनः मूलं अष्टशो जपित्वा, मत्स्य मुद्रां आच्छाद्य, अस्त्रेण संरक्ष्य, हुम् इति अवगुण्ठ्य, वं इति धेन्वामृतीकृत्य, सन्निरोधिन्या सन्निरुद्ध्य, शंख, मुसल, चक्र, महामुद्रा, योनिमुद्राय प्रदर्शय।

इति विशेषार्घ्य स्थापनम्

षोडशोपचार पूजनम्

पाद्यमं – मूलं इदं पाद प्रक्षालनार्थं पाद्यम् समर्पयामि।
अर्घ्यम – मूलं इदं हस्ते अर्घ्यं समर्पयामि।
आचमनीयम् – मूलं इदं मुखे आचमनीयं समर्पयामि।
मधुपर्कं – मूलं इदं मधुपर्कम् समर्पयामि।
स्नानीयम – मूलं इदं जलं स्नानीयम् समर्पमयामि।

इति स्नानीयं दत्वा शतरुद्रियेण, पूरुष सूक्तेन च स्नापयित्वा आचमनीयं त्रि दद्यात।

वस्त्रम् – मूलं इदं वस्त्रं समर्पयामि।
यज्ञोपवीतम् – मूलं इदं यज्ञोपवीतम समर्पयामि।
आभूषणम् – मूलं इदं आभूषणम समर्पयामि।
*गन्धम् – मूलं इदं गन्धम् समर्पयामि।
(शैव अष्टगन्ध यथासंभव)
अक्षतानि – मूलं इदं अक्षतानि समर्पयामि।
पुष्पाणि – मूलं इदं पुष्पमालां समर्पयामि।
धूपम् – मूलं इदं धूपम् आघ्रापयामि।
दीपम् – मूलं इदं दीपम दर्शयामि।
नैवेद्यं – मूलं इदं नैवद्यं निवेदयामि।
फलं – मूलं इदं ऋतुफलं समर्पयामि।
ताम्बूलं – मूलं इदं ताम्बूलं समर्पयामि।
दक्षिणां – मूलं इदं दक्षिणां समर्पयामि।

---

* शैव अष्टगंध :- चंदन, अगरु, तमाल, जल, कुङ्कुम, कर्पूर, कुक्षीत, कुष्ट, आदि।

शरभ यन्त्रम्
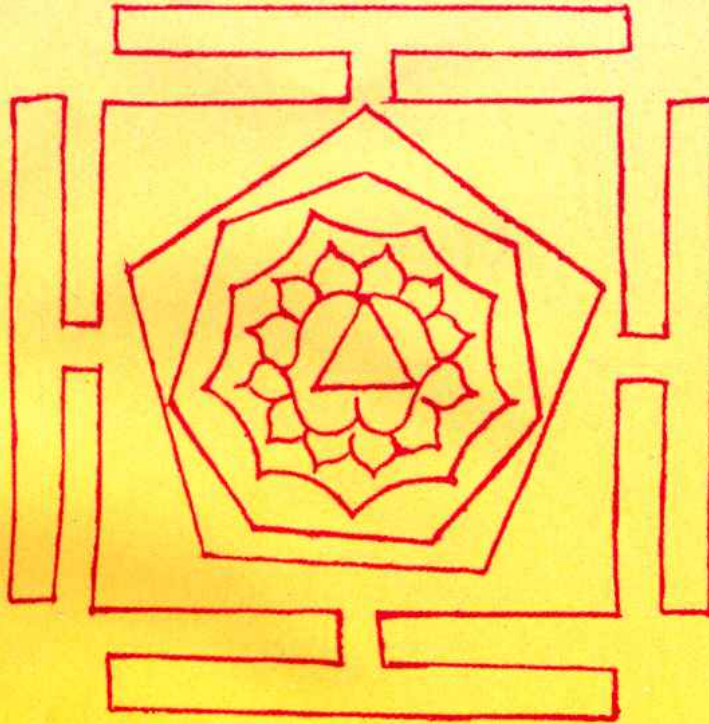
त्रिकोणं विलिखेत् पूर्वं तद्बाह्ये तु दल द्वयम् ।
द्वादशारंतु तद्बाह्ये तद्बाह्ये तु नवास्त्रकम् ॥
सप्तास्त्रं चैव पञ्चास्त्रं भूपुरं च क्रमाल्लिखेत् ।
पावकादि पृथिव्यन्तं लिखेन्मन्त्रं यथा क्रमम् ॥
तद्बहिः कोणषटकेषु भाग रभ्यमनुं शिषे ।
खट् पट् जहि तथा छिन्धि भिन्धि हन्धि लिखेत् क्रमात् ॥
अकारादि क्षकारान्तं वेष्टये द्विन्दु संयुतम् ।
मॅहायन्त्रमिदं पुण्यं सप्तावरणकं परम् ॥

अथावरण पूजनम्

प्रथमावरणार्चनम्

मध्ये मूलेन त्रिःसम्पूज्य, षडंगानि सम्पूज्य –

ॐ हृदयाय नमः	–	आग्नेय	कोणे
ॐ शिरसे स्वाहा	–	ईशान	कोणे
ॐ शिखायै वषट्	–	नैऋत्य	कोणे
ॐ कवचाय हुम्	–	वायव्य	कोणे
ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्	–	मध्ये	कोणे
ॐ अस्त्राय फट्	–	चतुर्दिक्षु	कोणे

पुनर्मूलमुच्चार्य एताः प्रथमावरण देवता साङ्गा परिवाराः सवाहनाः सायुधा सशक्तिका सन्तर्पिता सन्तु नमः। सामान्यर्घ्योदकेन दक्ष हस्ते जलं समर्प्य।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा –

अभीष्ट सिद्धिं में देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

दक्ष हस्ते पुष्पं समर्प्य, मां शान्तिदाः सुखदाः सन्तु। प्रणमेत्

द्वितीयावरणार्चनम्

त्रिकोणस्यवामदक्षोर्ध्व कोणेषु –

ॐ श्रीं चन्द्रं पूजयामि तर्पयामि नमः – त्रिकोणस्य वाम कोणे
ॐ सूं सूर्यं पूजयामि तर्पयामि नमः – त्रिकोणस्य दक्षिण कोणे
ॐ रं आग्नयें पूजयामि तर्पयामि नमः – त्रिकोणस्य उर्ध्व कोणे

त्रिकोणान्तर्गते चतुर्दिक्षु –

ॐ भं भैरवं पूजयामि तर्पयामि नमः – पूर्वे
ॐ भ्रूं वाडवाग्नि पूजयामि तर्पयामि नमः – पश्चिमे
ॐ क्षं कालीं पूजयामि तर्पयामि नमः – दक्षिणे
ॐ हुं शूलिनी दुर्गां पूजयामि तर्पयामि नमः – उत्तरे
ॐ हां व्याधीं पूजयामि तर्पयामि नमः – दक्षिण पार्श्वे
ॐ हैं मृत्युं पूजयामि तर्पयामि नमः – वाम पार्श्वे

मूलमूच्चार्य एता द्वितीयावरण देवता साङ्गा सपरिवाराः सवाहनाः सायुधा सशक्तिका सन्तर्पिता सन्तु नमः। सामान्यर्घ्योदकेन दक्ष हस्ते जलं समर्प्य

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा –

अभीष्ट सिद्धिं में देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

दक्षहस्ते पुष्पं समर्प्य, मां शान्तिदाः सुखदा सन्तु। प्रणमेत्

तृतीयावरणार्चनम्

अष्टदलेषु पूर्वादिक्रमेण –

ॐ लं इन्द्रं सवज्रं पूजयामि तर्पयामि नमः – पूर्वे
ॐ रं अग्निं सशक्तिं पूजयामि तर्पयामि नमः – आग्नेये
ॐ यं यमं सदण्डं पूजयामि तर्पयामि नमः – दक्षिणे
ॐ क्षं नैर्ऋतिं सखड्गं पूजयामि तर्पयामि नमः – नैर्ऋति कोणे
ॐ वं वरुणं सपाशं पूजयामि तर्पयामि नमः – पश्चिमे
ॐ यं वायुं सांकुशं पूजयामि तर्पयामि नमः – वायव्ये
ॐ सं सोमं सगदां पूजयामि तर्पयामि नमः – उत्तरे
ॐ ह्रीं ईशानं सत्रिशूलं पूजयामि तर्पयामि नमः – ईशाने

मूलमुच्चार्य एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गा सपरिवारा सवाहनाः सायुधा सशक्तिका सन्तर्पिता सन्तु नमः। सामान्यर्घ्योदकेन दक्ष हस्ते जलं समर्प्य।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा –

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

दक्ष हस्ते पुष्पं समर्प्य, मां शान्तिदाः सुखदाः सन्तु। प्रणमेत्।

चतुर्थावरणार्चनम्

ऐं ह्रीं श्रीं द्वादश शक्त्या मदनाद्या पूर्वादिक्रमेण –

ॐ मदनां साङ्गा सपरिवाराः सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः
ॐ ह्रीं रक्तचामुण्डां सपरिवाराः सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ हुम् मोहिनीं सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ द्रां द्राविणीं सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ हैं शब्दाकर्षिणीं सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ सं वाणीं सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ श्रीं रमां सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ क्षूं मायां सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ शत्रु पुलन्दिनीं सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ क्ष्रां शास्तां सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ क्ष्रूं क्षोभिणी सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ जें जेष्ठां सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

मूलमुच्चार्य एताः चतुर्थावरण देवताः साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका सन्तर्पिता सन्तु नमः। सामान्यर्घ्योदकेन दक्ष हस्ते जलं समर्प्य

पुष्पाञ्जलिं गृहित्वा –

अभीष्ट सिद्धिं में देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

दक्ष हस्ते पुष्पं समर्प्य, मां शान्तिदाः सुखदाः सन्तुः प्रणमेत्।

पंचमावरणार्चनम्

षोडशारे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन यजेत् –

ॐ अं ओं ब्रह्माणं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ आं सौं परां साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ इं श्रौं विष्णुं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ ईं ह्रीं मायां साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ उ ध्रां वराह साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ ऊं द्रैं पृथ्वीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ ऋं ज्यां विधिं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ ॠं षं शिवायै साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ लृं नास्त्यौ साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ ॡं वैं ट्रं स्रं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ एं ऐं वीरभद्रं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ ऐं ओं भारतीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ ओं कं ओं शुकं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ औं ह्लौ शंकरं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ अं डं रुद्रं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ अः ह्रीं कालरुद्रं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा
सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः

मूलमुच्चार्य एताः पंचमावरण देवता : साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका सन्तर्पिता सन्तु नमः। सामान्यर्ध्योदकेन दक्ष हस्ते जलं समर्प्य।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा –

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्।।

दक्ष हस्ते पुष्पं समर्प्य, मां शान्तिदाः सुखदाः सन्तु। प्रणमेत्।

षष्ठमावरणार्चनम्

प्रथम भूपुरे पूर्वादिक्रमेण –

ॐ गं गणपति साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः – पूर्वे

ॐ यं यमं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः – दक्षिणे

ॐ स्कं स्कन्दं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – पश्चिमे
ॐ भं भैरवं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – उत्तरे

प्रथम भूपुरे विदिक्षु –

ॐ त्रैं त्वरितां साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – वायव्ये
ॐ ध्रां वीरभद्रं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – ईशाने
ॐ बं बड़वानल भैरवं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – आग्नेये
ॐ ईं महामायां साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – नैऋत्ये

बाह्य भूपुरे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन ब्रह्माद्याः पूजयेत –

ॐ आं ब्राह्मीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः– पूर्वे
ॐ ईं माहेश्वरीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – आग्नेये
ॐ उं कौमारीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – दक्षिणे
ॐ ऋं वैष्णवीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – नैऋत्ये
ॐ लृं वाराहीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – वायव्ये
ॐ औं चामुण्डां साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – उत्तरे

ॐ अः महालक्ष्मीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः – ईशाने

मूलमुच्चार्य एताः षष्ठमावरण देवताः साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका सन्तर्पिता सन्तु नमः सामान्यर्घ्योदकेन दक्ष हस्ते जलं समर्प्य।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा –

अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम्।।

दक्ष हस्ते पुष्पं समर्प्य, मां शान्तिदाः सुखदाः सन्तु। प्रणमेत्।

सप्तमावरणार्चनम्

ततः परितः वृत्तक्रमेण ब्रह्माद्याः पूजयेत् –

ॐ कं ब्रह्माणं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ खं जाह्नवीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ गं गणेशं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ घं भैरवं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ङं कालाय साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ चं भद्रकालीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ छं भीमकालीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ जं जातवेदसं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ झं अर्धनारीश्वरं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ञ् परमात्मानम् साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ टं पृथ्वीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ठं चन्द्रं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ डं शुक्रं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ढं विष्णुं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ णं बलभद्रं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ तं धनदं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ थं पराशक्तिं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ दं दुर्गां साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ धं धर्मं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ नं निर्विकल्पं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ पं अग्निं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ फं भैरवं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ बं अश्विनीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ भं भार्गवं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ मं ईश्वरं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ यं वायुं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ रं कृशानुं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ लं शक्तिं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वं वरुणं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ शं शंकरं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ षं द्वादशादित्यां साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ सं भारतीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका
पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ हं सदाशिवं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ ळं पृथिवीं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ क्षं श्रीनृसिंहं साङ्गा सपरिवारा सवाहना सायुधा सशक्तिका पूजयामि तर्पयामि नमः।

मूलमुच्चार्य एताः सप्तमावरण देवताः साङ्गा सपरिवाराः सवाहना सायुधा सशक्तिका सन्तर्पिता सन्तु नमः। सामान्यर्घ्योदकेन दक्ष हस्ते जलं समर्प्य।

पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा –

अभीष्ट सिद्धिं में देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

दक्ष हस्ते पुष्पं समर्प्य, मां शान्तिदाःसुखदाः सन्तु। प्रणमेत्।

इत्थमावरण पूजनं कृत्वा पाद्यार्घ्याचमनीयम् दद्यात्।

मूलं पाद्यं समर्पयामि।
मूलं अर्घ्य समर्पयामि।
मूलं आचमनीयम् समर्पयामि।

तत्पश्चात् पञ्चबलिं दद्यात्।

पंच बलिदानम्

संकल्प –

ॐ तत्सद्यादि मम पूर्व संकल्पित फलावप्तर्थं श्री बटुक भैरव देवता, योगिनी, क्षेत्रपाल, गणेश एवं सर्वभूत बलि माषान्न द्रव्यैः बलिदानं अहम्करिष्ये।

ईशान कोणे – सिन्दूरेण भूमौ बिन्दु त्रिकोण वृत्त चतुरस्रात्मक यंत्र विलिख्य –

गंधादिभि सम्पूज्य ॐ व्यापक बलि मण्डलाय नमः तत्र आधारोपरि बलि द्रव्यं शाल्योदनं शर्करा, गुड, अपूप, माष, दधि, घृत प्लुत, त्रिमधु, युत, माष, मुदगान्न बलि द्रव्यं संस्थाप्य।

बलि द्रव्योपरि रक्त पुष्पम घृत पिष्ट दीपं च संस्थाप्य।

बं बटुकाय नमः इति मंत्रेण दीपं प्रज्ज्वाल्य गंधाक्षत पुष्पैः बलि द्रव्यं सम्पूज्य ॐ बटुक बलि द्रव्याय नमः वामा हस्तस्य अंगुष्ठ अनामिकाभ्यां बलि धृत्वा दक्षिण हस्ते जलं आदाय –

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं एह्येहि देवी पुत्र बटुकनाथ कपिल जटाभार भास्वर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्व विघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण-स्वाहा।

जलं बलि चतुःदिक्षु उत्सृजेत

ॐ भो बटुक इमं सदीप बलिं समर्पयामि।

प्रार्थना –

कर कलित कपालः कुण्डली।
दण्ड पाणिस्तरुण तिमिर नील व्याल यज्ञोपवीती।
ऋतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतुर्जयति।
बटुक नाथः सिद्धिदः साधकानाम्।
बलिदानेन संतुष्टो बटुकनाथ सिद्विदः।
शांति करोतुमे नित्यं भूतवेताल सेवितः।
अनेन बलिदानेन श्री बटुकनाथ प्रीयताम।।

१. योगिनी बलि

आग्नेय कोणे – सिन्दूरेण पूर्ववत् बलि मण्डलं विधाय
ॐ व्यापक मण्डलाय नमः गंधाक्षतैः सम्पूज्य।

आधारोपरि दीप सहित बलि द्रव्यं संस्थाप्य गंधाक्षतैः सम्पूज्य दीपं प्रज्ज्वाल्य ॐ यां योगिनी बलि द्रव्याय नमः इति बलि द्रव्यं पूजयेत्। वाम अंगुष्ठ मध्यमा अनामिकाभ्यां स्पृश्येत्।

दक्षिण हस्ते जलं गृहीत्वा –

ॐ यां सर्व वर्ण योगिनीभ्यः इदं बलि गृह्ण गृह्ण हुँ फट स्वाहा। भो योगिनी इमं सदीप बलिं समर्पयामि, जलं उत्सृजेत्।

प्रार्थना –

उर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिविगगनतले भूतले,
निष्कलेवा पातालेवाऽतलेवा सलिल पवनयोर्यत्र कुत्र,
स्थिता वा क्षेत्रे पीठो प्रपीठा दिशिकृत पदा
धूपदीपादिकेन प्रीत्यादेव्यः सदानः शुभ,
बलि विधिना पांतु वीरेन्द्र वन्द्याः।

२. क्षेत्रपाल बलि

नैऋत्य कोणे –सिन्दूरेण पूर्ववत् बलिमण्डलं विधाय
ॐ क्षां क्षेत्रपाल बलि मण्डलाय नमः गन्धादि सम्पूज्य।

घृत पिष्ट दीप सहित बलि द्रव्यम् बलि मण्डलोपरि संस्थाप्य।

दीपं प्रज्ज्वाल्य गंध पुष्पेण बलि द्रव्यम् सम्पूज्य – ॐ क्षां क्षेत्रपाल बलि द्रव्याय नमः वाम अंगुष्ठ तर्जनीभ्यां बलिं स्पृश्येत्।

दक्षिण हस्ते जलं आदाय –

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः भो स्थान क्षेत्रपाल
इमं सदीपमाषान्न बलिं गृह्ण गृह्ण
सर्वविधि रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।
जलं बलिचतुर्दिक्षु उत्सृजेत्

प्रार्थना –

भाजचन्द्र जटा धरम् त्रिनयनम् नीलाञ्जनादिप्रभम्।
दोर्दण्डान्तगदाकपालभरूठ स्त्रग्गंधवस्त्रावृत्तम्।
घण्टा घुर्घुर मे खलध्वनिमिलिद् धूंकार भीमं विभुं।
वन्दे सहित सर्प कुण्डलधरं श्री क्षेत्रपालं भजे ।
याऽस्मिन क्षेत्रेवासी च क्षेत्रपालः स किंकरः।
प्राप्तोऽयं बलिदानेन सर्वरक्षां करो तु मे।
अनेन बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम्।।

३. गणपति बलि

वायव्य कोणे – सिन्दूरेण पूर्ववत् बलि मण्डलं विधाय
गणपति बलि मण्डलाय नमः गन्धपुष्पेन सम्पूज्य।

बलि मण्डलोपरि घृत पिष्ट दीप, रक्तपुष्पसहित बलि द्रव्यं

संस्थाप्य।

दीपं प्रज्ज्वाल्य गंध पुष्पेण बलि द्रव्यं सम्पूज्य।

ॐ गं गणपति बलि द्रव्याय नमः वाम अंगुष्ठमध्यमाभ्यां बलि स्पृश्येत्।

दक्षिण हस्ते जलं आदाय –

ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय आनय सर्वोपचार सहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा।

भो गणपति इमं सदीपबलिं समर्पयामि।

प्रार्थना –

विघ्नध्वान्त निवारणैकतराणि विघ्नाटवी हव्यवाट
विघ्नव्याल कुलभिमान गरुडौ विघ्नेन पंचातनः।
विघ्नतुंगगिरि प्रभेदनपवि विघ्नांवुधेवडिवः
विघ्नाथौघन प्रचंड पवनो विघ्नेश्वरः पातुनः।।
सर्वदा सर्व कार्याणि निर्विघ्नं साधयेन्मम
शांति करोतु सततं विघ्नराज सशक्तिकः।।
अनेन बलिदानेन गणपति देवता प्रीयताम्।

४. सर्वभूत बलि

उत्तर दिशायाम् सिन्दूरेण बलि मण्डलं विधाय सर्वभूत बलि मण्डलाय नमः गन्ध पुष्पेन सम्पूज्य।

बलि मण्डलोपरि घृत पिष्ट दीप, रक्तपुष्पसहित बलि द्रव्यं संस्थाप्य।

दीपं प्रज्ज्वाल्य गंध पुष्पेण बलि द्रव्यं सम्पूज्य।

ॐ सर्वभूत विघ्नकृतेभ्यो बलि द्रव्याय नमः सर्वांगुलिषु बलि स्पृश्येत्।

दक्षिण हस्ते जलं आदाय –

ॐ ह्रीं सर्व विघ्न कृद्भ्य भूतेभ्योः इमं सदीप बलिं गृह्ण गृह्ण मम सर्व मनोरथान् पूरय पूरय हुं फट् स्वाहा।

भो सर्व भूत विघ्न कर्तारः इमं बलिं समर्पयामि।

प्रार्थना –

ये भूताविघ्नकर्तारः दिविभूम्यान्तरिक्षगाः।
ये पाताल संस्थाश्च शिवयोगेन भाविता।
नगरेवाथ संग्रामे अटव्यां च सरित्तरे।
तृप्यन्तु प्रीतिमनसो भूता गृह्णन्तुमिमंबलिं
अनेन बलिदानेन सर्वभूत विघ्नकृतेभ्यः प्रियन्ताम्।।

धूपम, दीपम्, नैवेद्यम् च पूर्वत् दद्यात्।

नैवेद्यम –

आधारोपरि स्वर्णादिनिर्मित पात्रे माषान्न पायसान्न नैवेद्यम् संस्थाप्य।

अस्त्रेण सम्प्रोक्ष्य, चक्र मुद्रां प्रदर्श्य। द्वादशवारं वायुबीजं (यं) अभिमंत्रित जलैः नैवेद्यम् सम्प्रोक्ष्य। दक्षिण हस्ते नैवेद्योपरि कृत्वोत्सृष्टे वामकरतलं न्यस्य 'रं' बीजं विभाव्य। वामकरे (वं) अमृत बीजं विभाव्य तत्पृष्ठे दक्षिणं दत्वा नैवेद्योपरि दर्शयेत। मूलेन प्रोक्ष्य मूलं अष्टधा जपित्वा। धेनुमुद्रां प्रदर्श्य गन्धपुष्पै सम्पूज्य वामांगुष्ठेन पात्रम् स्पृष्ट्वा

दक्ष हस्ते जलम् आदाय –

मूलमुच्चार्य 'श्रीशरभेश्वरेदं नैवेद्यं गृहाण् स्वाहा' इति जलमुत्सृजेत। नैवेद्यमुद्राम् प्रदर्श्य-

प्राणाद्या पंचग्रासमुद्राः प्रदर्श्य भगवतो भोजनं भावयित्वा मध्ये पानीयं दत्त्वा आचमनीयं करोद्वर्तनकं आचमनीयं फलं ताम्बूलं दद्यात्। नैवेद्यम् विस्सृज्य नीराजनम् कुरु।

छत्र चामरादि राजोपचारान् कुर्यात्।

छत्रचामरादि दर्शयन् बुद्धिः शवासनाक्लृप्ता दर्पणम् मंगलानि च। मनोवृर्त्तिविचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता। ध्वनयो गीतरूपेण शब्दा वाद्य प्रभेदतः। छत्राणि तव पद्मानि कल्पितानि मयाप्रभो। सुषुम्नाध्वजरूपेण प्राणाद्याश्चामरात्मना। अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना।। इन्द्रियाण्यश्वरूपाणि शब्दादीन् रथवर्त्मना। मनः प्रकट रूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः। सर्वमन्यत्तथाक्लृप्तं तवोप करणात्मना।

नीराजनम्

स्वर्णादिपात्रे अष्टदलं कृत्वा गोधूमपिष्ट रचितानि नवदीपानि संस्थाप्य। मूलेन प्रज्ज्वाल्य गंधाक्षतादीनि सम्पूज्य। मूलेनाष्टधाभिमंत्र्य जानुभ्यामवनिम् मत्वा नीराजयेत्।

समस्त देवदेवेश परिवारगणावृत आरार्तिकमिदं देव गृहाण् मम सिद्धये इति आरार्तिकमन्त्रेण परिवर्त्य भूमाकारेण परिभ्रामयेत् इति नीराजनम्। इति साष्टांगम् प्रणमेत्।

षडङ्ग न्यासम् पूर्ववत् कृत्वा अष्टोत्तर सहस्रम

मूलमंत्रम् जपेत्। पुनः षडंगन्यासम् विधाय दक्षहस्ते जलमादाय

गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत् प्रसादात् महेश्वर।।

५. चण्डेश्वर बलि

ईशान कोणे चतुरस्रमण्डलम् कृत्वा गन्धपुष्पैः सम्पूज्य तत्र चण्डेश्वराय नमः

निर्माल्यम् विस्सृज्य देवम् दण्डवत् प्रणिपत्य प्रदक्षिणि कृत्य क्षमापयेत्।

अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे-पदे।
को परः क्षमते लोके केवलं स्वामिनं विना।।

इति क्षमाप्य तव पादाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे।

अथ उद्वासनम्

सामान्यार्घोदकात् किञ्चिज्जलमादाय –

साधु वा साधुकर्म यद्यदाचरितंमया।
तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम।।

शंखजलम् देव दक्षहस्ते समर्प्य। शंखजलेन आत्मानमभ्युक्ष्य आवरण देवताः शरभांगे लीनाः सन्तुः। शंखं प्रक्षाल्य स्वस्थाने निदध्यात्। ततो मूलेन तीर्थ निर्माल्यं स्वीकृत्य –

ज्ञानतोऽज्ञानतोवापि यन्मया चरितं शिवे।
तव कृत्यमितिज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वरः।।

खेचरीं बद्ध्वा उद्वास्य तेजोरूपेण परिणतां श्रीशरभदेवताः पूर्ववत् हृदये नीत्वा तत्र च मूर्ति पञ्चधोपचर्य पुनरात्माभिन्न संविद्रूपेण विभावयेदिति विसर्जनम्।

नित्य होमः

स्थण्डिलं कुण्डं वा कल्पयित्वा कुशैः सम्मार्ज्य तत्र अग्निम् संस्थाप्य, सम्पूज्य, अग्निदेवतयोरैक्यं विभाव्य मूलमन्त्रोत्तरेः प्राणादि पञ्चमन्त्रैः पञ्चाहुतीः, षडंगमन्त्रैः षडाहुतीश्च घृतान्न पायस तिलतण्डुल तदुभयसुगन्धि पुष्पाणामन्यतम द्रव्येण हुत्वा प्रदक्षिणि कृत्य वह्निम् विसृज्य।। ततः पादोदकं पीत्वा नैवेद्यं अन्यस्मै भक्ताय किञ्चिद् दत्त्वा किञ्चिद् स्वयं स्वीकृत्य सुखं विहरेत्। ततः कवचं, स्तोत्र, सहस्रनामादि पारायणम् कुर्यात्।

श्री गणेशाय नमः

अथ शरभ मन्त्र कवच लिख्यते

संकल्प – ॐ अस्य श्रीशरभसाल्वु पक्षिराज मंत्र कवच मालामंत्रस्य।

कालाग्नि रुद्रऋषिः अति जगतीछंदः श्रीशरभेश्वरोदेवता ॐ खें बीजं श्री सालुवाय स्वाहा शक्तिः पक्षिराजाय हुं कीलकं।

श्री शरभेश्वर प्रीत्यर्थे मम सर्वोपद्रव सर्वग्रह बाधा निवारणार्थे सर्वशत्रुनिवृत्त्यर्थं चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्ध्यर्थं श्री शरभ मंत्र कवच महामाला मंत्र जपम्, अहं करिष्ये इति संकल्पः।

मूलमंत्रेण प्राणायामं कुर्यात्।

ततो ऋष्यादिन्यास –

ॐ कालाग्नि रूद्र ऋषये नमः शिरसि।
ॐ जगती छंद से नमः मुखे।
ॐ शरभेश्वरोदेवताय नमः हृदये।
ॐ खें बीजाय नमः गुह्ये।
ॐ श्री सालुवाय स्वाहाः शक्ति नमः पादयोः
ॐ पक्षिराजाय हुं कीलकाय नमः सर्वांगे व्यापकं कृत्वा।
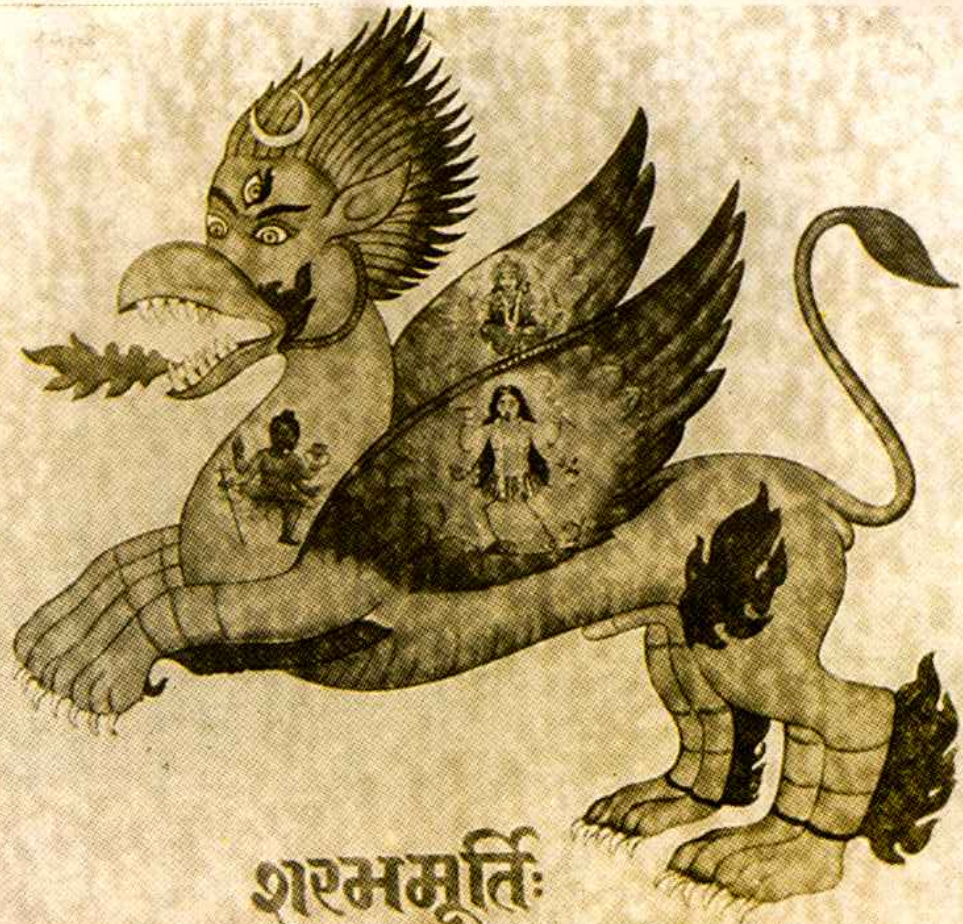
शरभमूर्तिः

अथ करं न्यास –

ॐ खें खां नमः अंगुष्ठाभ्याम्।
ॐ खं फट् नमः तर्जनीभ्याम्।
ॐ प्राणग्रहासि प्राणग्रहासि हुं फट् नमः मध्यमाम्।
ॐ सर्वशत्रु संहारणाय नमः अनामिकाभ्याम्।
ॐ शरभ सालुवाय नमः कनिनिष्टकाभ्याम्।
ॐ पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा नमः करतलकर पृष्ठाभ्याम्।

अथ अंगंन्यास –

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं खें खां नमः हृदयाय नमः।
मुष्टि विनिर्गतांगुष्ठो।

ॐ इं चं छं जं झं ञं खं फट् ईं नमः शिरसे स्वाहा।
तर्जनीवा दृशौ शिरसि।

ॐ उं टं ठं डं ढं णं प्राण-ग्रहासि प्राण-ग्रहासि हुं फट्
ॐ शिखायै वषट्। निरंगुष्ठ कनिष्टौशिखा।

ॐ एं तं थं दं धं नं सर्वशत्रूसंहारणाय ऐं नमः कवचाय हुं।
निरंगुष्ठ प्रदेशिवीष्ट्य कृतौ। स्कंधा हृदयांतं कवचं।

ॐ ओं पं फं बं भं मं शरभ सालुवाय औं नमः नेत्रत्रयाय वौषट्।
तर्जन्यादित्रयं वक्रे।

ॐ अं यं रं लं वं शं सं हं ळं क्षं पक्षिराजाय हुं फट् स्वाहा।
अंः अस्त्राय फट्। तालुस्याग्रस्त्रम्।

मूल मंत्रेण –

ॐ ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोंमितिदिग्बंधः व्यापकं कृत्वा।

अथ ध्यानम –

ॐ रत्नाभंसुप्रसन्नां त्रिनयनम मृतोन्मत्रभाषाभिरामं,
कारुण्यांभोधिमीशं वरदमभयदं चंद्ररेखावतंसं।
शंखध्वानाखिलाशा प्रतिहत विधिनाभा समानात्प्रभावं सर्वेशं
सालुवेशं प्रणत भय हरं पक्षिराजं नमामि।।१।।

चंद्रार्काग्निस्त्रि दृष्टिः कुलिश वर नखःचंचलात्युग्र,
जिह्वा काली दुर्गाच पक्षौहृदय जठर गौ भैरवो वाडवाग्निः ।
उरुस्थौ व्याधि मृत्यु श र भ ख ग व रश्चण्ड वातातिवेगः
संहर्त्ता सर्वशत्रून् सजयतिशरभः सालुवः पक्षिराजः।।२।।

विमल निभमहोद्यत्कृतिवासोवसानं द्रुहिण मुख मुनिन्द्रे,
स्तूयमानं गिरीशं स्फटिक मणिजयास्त्रक् पुस्तकोद्यत्कराब्जै
शरभमिहमुपास्ये सालु वेशं खगेशं।।३।।

मृगस्त्वर्ध शरीरेण पक्षाभ्यांचंचुना द्विजः
अधोवक्र चतुष्पादं ऊर्ध्व वक्रश्चतुर्भुजः।।४।।

कालांतदहन प्रख्यो नीलजीमूत निःस्वनः।
अरिस्तुदर्शना देव विनष्ट बलविक्रमः।।५।।

सटाछटोग्ररूपाय पक्षविक्षिप्त भूभृते।
अष्टपादाय रुद्राय नमः शरभमूर्त्तये।।६।।

श्रुलायुधायसुर वृंदक मौलिमाला लोलायमान चरणांबुजपल्लुवाय।
हेलावलेयपरिभृत नृसिंह देह लीलावतार शरभाकृतये नमस्ते।।७।।

त्रिशुलं १ डमरूं २ खड्गं ३ चापं ४ बाणं ५ भुशुंडि च।
मुशलं ७ तुगदा श्चैव अष्टमुद्रां-प्रदर्शयेत्त।।८।।
मानसौपचारैः सम्पूज्यः। मूल मंत्रंयथाशक्तया जपेन्। ततः कवच मंत्रान्पठेत्।

श्री शिव उवाच –

अथ शरभ स्तोत्रम

ॐ ॐ नमो भगवते श्री शिवाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम पुरतः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१।।

ॐ ॐ नमो भगवते मायाधीशाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम पृष्ठतः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।२।।

ॐ ॐ नमो भगवते पिनाकिने ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम दक्षिण पार्श्वे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३।।

ॐ ॐ नमो भगवते महेश्वराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम वाम पार्श्वे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।४।।

ॐ ॐ नमो भगवते शंभवे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष शिखाग्रे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।५।।

ॐ ॐ नमो भगवते शंकराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ललाटे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।६।।

ॐ ॐ नमो भगवते ईश्वराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष वदने प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७।।

ॐ ॐ नमो भगवते पुरान्तकाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष भ्रुवोर्मध्ये प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८।।

ॐ ॐ नमो भगवते स्थाणवे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष भ्रुवौ प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९।।

ॐ ॐ नमो भगवते कपर्द्दिने ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष लोचनयो; प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१०।।

ॐ ॐ नमो भगवते शर्वाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष श्रोत्रयोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।११।।

ॐ ॐ नमो भगवते वागीशाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष लंबिकां प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१२।।

ॐ ॐ नमो भगवते वृषभारुढाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष नासापुटे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१३।।

ॐ ॐ नमो भगवते वृषभध्वजाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष नासाग्रे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१४।।

ॐ ॐ नमो भगवते स्मरान्तकाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ताल्वोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१५।।

ॐ ॐ नमो भगवते भक्त वत्सलाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम् ओष्ठयो: प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१६।।

ॐ ॐ नमो भगवते मृत्युञ्जयाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष दंतेषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१७।।

ॐ ॐ नमो भगवते भूतराजाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष चिबुके प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१८।।

ॐ ॐ नमो भगवते परमेशाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष कपोलयो: प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१९।।

ॐ ॐ नमो भगवते कपालभृते ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष त्रिके प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।२०।।

ॐ ॐ नमो भगवते पशुपतये ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष कंठे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।२१।।

ॐ ॐ नमो भगवते शूलिने ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष हन्यो: प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।२२।।

ॐ ॐ नमो भगवते हराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष स्कंध द्वयो प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।२३।।

ॐ ॐ नमो भगवते धूर्जटेय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष भुजाभ्यां प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।२४।।

ॐ ॐ नमो भगवते महादेवाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मध्य भुजसंध्ययोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।२५।।

ॐ ॐ नमो भगवते ईशानाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष कूर्परयोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।२६।।

ॐ ॐ नमो भगवते जगन्नाथाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष संध्ययोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।।२७।।

ॐ ॐ नमो भगवते चंद्रशेखराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष कोष्ठकाः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।२८।।

ॐ ॐ नमो भगवते त्रिनेत्राय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मणिबंधयोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।२९।।

ॐ ॐ नमो भगवते भीमाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष करतले प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३०।।

ॐ ॐ नमो भगवते मृडाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम करपृष्ठे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३१।।

ॐ ॐ नमो रूद्राय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममांगुष्ठयोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३२।।

ॐ ॐ नमो भगवते उमासहायाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष तर्जन्योः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३३।।

ॐ ॐ नमो भगवते भर्गाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मध्यमायोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३४।।

ॐ ॐ नमो भगवते करालास्याय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष अनामिकयोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३५।।

ॐ ॐ नमो भगवते कालकंठाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष कनिष्ठकयोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३६।।

ॐ ॐ नमो भगवते गंगाधराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममांगुलिपर्वसु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३७।।

ॐ ॐ नमो भगवते अप्रमेयाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम नखेषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३८।।

ॐ ॐ नमो भगवते तत्पुरुषाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष वक्षसि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।३९।।

ॐ ॐ नमो भगवते दक्षाध्वरांतकाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष कक्षयोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।४०।।

ॐ ॐ नमो भगवते अघोराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष हृदये प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।४१।।

ॐ ॐ नमो भगवते वामदेवाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष स्तनयोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।४२।।

ॐ ॐ नमो भगवते भालदृशे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष जठरे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।४३।।

ॐ ॐ नमो भगवते नारायणाव्याय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष नाभौ प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।४४।।

ॐ ॐ नमो भगवते प्रजाकराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष कुक्षयौः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।४५।।

ॐ ॐ नमो भगवते महाबलाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम कुक्षिपार्श्वयोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यों हुं फट् स्वाहा।।४६।।

ॐ ॐ नमो भगवते सद्योजाताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष कटिं प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।४७।।

ॐ ॐ नमो भगवते भैरवाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष पृष्ठभागे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।४८।।

ॐ ॐ नमो भगवते मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष जघने प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।४९।।

ॐ ॐ नमो भगवते जितेन्द्रियाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष गुदे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।५०।।

ॐ ॐ नमो भगवते ऊर्ध्वरितसे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष लिंगदेशे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।५१।।

ॐ ॐ नमो भगवते विश्व मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष वृषणि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।५२।।

ॐ ॐ नमो भगवते भवाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष उरुयुग्मे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।५३।।

ॐ ॐ नमो भगवते भवान्तकाय (स्मरान्तकाय) ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष जान्वोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।५४।।

ॐ ॐ नमो भगवते हुँकाराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष जंघयोः प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।५५।।

ॐ ॐ नमो भगवते फट्काराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष गुल्फयोः पार्श्वये प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।५६।।

ॐ ॐ नमो भगवते वषट्काराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष पादपृष्टयोः पार्श्वये प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।५७।।

ॐ ॐ नमो भगवते वौषट्काराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममांघ्रिद्वयोः पार्श्वये प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।५८।।

ॐ ॐ नमो भगवते स्वाहाकाराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममांगुलिपर्वसु पार्श्वये प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट स्वाहा।।५९।।

ॐ ॐ नमो भगवते स्वधाकाराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममांगुलिषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।६०।।

ॐ ॐ नमो भगवते त्वरिताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम सर्वसंधिषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यों हुं फट् स्वाहा।।६१।।

ॐ ॐ नमो भगवते नृसिंहजिते ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष रोमकूपेषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।६२।।

ॐ ॐ नमो भगवते मनोवेगाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष त्वचा प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।६३।।

ॐ ॐ नमो भगवते कालजितये ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष रुधिरे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।६४।।

ॐ ॐ नमो भगवते पुष्टिदाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष माँसेषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।६५।।

ॐ ॐ नमो भगवते स्वस्तिदाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मेदसि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।६६।।

ॐ ॐ नमो भगवते सर्वात्मने ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममास्थिचये प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।६७।।

ॐ ॐ नमो भगवते जगत्प्रभवे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम मज्जायां प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।६८।।

ॐ ॐ नमो भगवते वृद्धिकराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष शुक्रे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।६९।।

ॐ ॐ नमो भगवते वाचामधीश्वराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष बुद्धौ प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७०।।

ॐ ॐ नमो भगवते शरभेश्वराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मूलाधारेअम्बुजे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७१।।

ॐ ॐ नमो भगवते अजाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष स्वाधिष्ठाने प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७२।।

ॐ ॐ नमो भगवते हरिप्रियाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मणिपूरे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७३।।

ॐ ॐ नमो भगवते सालुवेशाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष अनाहते प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७४।।

ॐ ॐ नमो भगवते जीवनायकाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७५।।

ॐ ॐ नमो भगवते सदाशिवाय ललाटे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष सर्वज्ञानप्रदाय मम आज्ञा चक्रे प्राणरक्षाय खैं सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७६।।

ॐ ॐ नमो भगवते महादेवाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ब्रह्मरन्ध्रे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७७।।

ॐ ॐ नमो भगवते पक्षिराजाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममाखिल कृतौ प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७८।।

ॐ ॐ नमो भगवते सर्व लोकवशीकराय पर गर्वजिते ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मर्माय प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।७९॥

ॐ ॐ नमो भगवते वज्रमुष्टिवराभीतिहस्तायकालाभ्र-सन्निभाया विजया सहितायाग्निजिते ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममयेंग्रांककुभि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८०।।

ॐ ॐ नमो भगवते शक्तिशूलकपालासिहस्ताय सौदामिनी प्रभाय जयायुताय महाभीमाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम वैश्वानर्यादिशि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८१।।

ॐ ॐ नमो भगवते दंडासि मुशलशूल पाशांकुश-कराम्बुजाय यमांतकाजितयुक्ताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममयाम्यांदिशि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८२।।

ॐ ॐ नमो भगवते खड्गखेटाग्नि परशुहस्ताय शत्रुविमर्दनाय अपराजिताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममनैऋत्यांदिशि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८३।।

ॐ ॐ नमो भगवते पाशांकुशधनुर्बाण पाणयेघोरायुताय दाह्य हरिद्राभायात्मजिते ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममवारुण्यां दिशि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८४।।

ॐ ॐ नमो भगवते ध्वजोग्रकवचोद्धार भुजाय दुर्गायुताय खगाय चण्ड वेगाय शिवाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममामारूत्यांदिशि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८५।।

ॐ ॐ नमो भगवते गदाक्षस्त्रग्वराभीतिकरां भोजाय शिवायुतायवनकाभासाय महातेजसे ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममकौवेर्यादिशि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८६।।

ॐ ॐ नमो भगवते त्रिशूलाहिकपालाग्निदोस्थलाय विद्यायुताय-भस्मोद्धूलित सर्वांगाय अपराजिताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममईशान्यदिशि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८७।।

ॐ ॐ नमो भगवते जपाक्ष पुस्तकां भोजकमंडलुलसत्कराय गिरायुक्ताय सर्वभूतहितेरताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम मम ऊर्ध्वायादिशि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८८।।

ॐ ॐ नमो भगवते शंखचक्रगदाभीतिहस्ताय पद्मयुताय अव्यायय नीलांजनसम नीलाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममपातालादिशि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।८९।।

ॐ ॐ नमो भगवते सालुवायनारसिंहजिते ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममानुक्तायंदिशि प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९०।।

ॐ ॐ नमो भगवते शरभाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम संग्रामे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९१।।

ॐ ॐ नमो भगवते वैरिकुलांतकाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष ममयुद्धेषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९२।।

ॐ ॐ नमो भगवते सर्वसौभाग्यदाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम जाग्रतस्वप्न सुसुप्तिषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९३।।

ॐ ॐ नमो भगवते सर्वसम्पत्प्रदाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम धन धान्यादिके प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९४।।

ॐ ॐ नमो भगवते सन्तानदाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम सुतासु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९५।।

ॐ ॐ नमो भगवते आयुष्कराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम पुत्रेषु दारेषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९६।।

ॐ ॐ नमो भगवते वृद्धिकराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम बंधुषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९७।।

ॐ ॐ नमो भगवते सर्व वशंकराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम ग्रहेषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९८।।

ॐ ॐ नमो भगवते ग्रामेश्वराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम ग्रामे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।९९।।

ॐ ॐ नमो भगवते दिगम्बराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम राज्ये प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१००।।

ॐ ॐ नमो भगवते शांतिकराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम राष्ट्रे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रुसंहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभुतेभ्यो फट् स्वाहा।।१०१।।

ॐ ॐ नमो भगवते धर्म शासनाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम राज्ञीणाय प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१०२।।

ॐ ॐ नमो भगवते दुष्ट हराय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम मार्गे प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१०३।।

ॐ ॐ नमो भगवते भैरवाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम धर्मकर्मेसु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१०४।।

ॐ ॐ नमो भगवते बटुकाय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय रक्ष रक्ष मम सर्वस्मिन्नस्थानेंषुभयेषुअवस्था-त्रितयेषु प्राणरक्षाय खें सर्वशत्रु संहारणाय ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं ह्रौं सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा।।१०५।।

शरभेशाष्टक - स्तोत्र मन्त्रम्

।। श्रीशिव उवाच।।

श्रृणु देवि महागुह्यं परं पुण्यविवर्धनम्।
शरभेशाष्टकं मन्त्रम् वक्ष्यामि तव तत्त्वतः।।१।।

ऋषि-न्यासादिकं यत्तत्सर्वं पूर्ववदाचरेत्।
ध्यान-भेदं विशेषेण वक्ष्याम्यहमतः शिवे।।२।।

ज्वलन कुटिलकेशं सूर्यचन्द्राग्नि नेत्रम्
निशित-तर-नखाग्रोद्धूतहेमापि देहम्।
शरभमथ मुनीन्द्रैः सेव्यमानं सितांगम्
प्रणतभयविनाशं भावयेत्पक्षिराजम्।।३।।

देवादिदेवाय जगन्मयाय शिवाय नालीक-निभाननाय।
शर्वाय भीमाय शराधिपाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय।।४।।

हराय भीमाय हरिप्रियाय भवाय शांताय परात्पराय।
मृडाय रुद्राय त्रिलोचनाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय।।५।।

शीतांशुचूडाय दिगंबराय सृष्टि-स्थिति-ध्वंसनकारणाय।
जटाकलापाय जितेन्द्रियाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय।।६।।

कलंक-कंठाय भवांतकाय कपाल-शूलात्तकराम्बुजाय।
भुजंगभूषाय पुरांतकाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय।।७।।

शमादिषट्काय यमांतकाय यमादि-योगाष्टकसिद्धिदाय।
उमाधिनाथाय पुरातनाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय।।८।।

घृणादि-पाशाष्टक-वर्जिताय खिलीकृतास्मत्पथि पूर्वगाय।
गुणादि-हीनाय गुणत्रयाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय।।९।।

कालाय वेदामृत-कंदलाय कल्याण-कौतूहल-कारणाय।
स्थूलाय सूक्ष्माय स्वरूपगाय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय।।१०।।

पंचाननायानिलभास्कराय पंचाशदर्णाद्यपराक्षराय।
पंचाक्षरेशाय जगद्धिताय नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय।।११।।

नीलकंठाय रुद्राय शिवाय शशिमौलिने।
भवाय भवनाशाय पक्षिराजाय ते नमः।।१२।।

परात्पराय घोराय शंभवे परमात्मने।
शर्वाय निर्मलांगाय सालुवाय नमो नमः।।१३।।

गंगाधराय सांबाय परमानंद तेजसे।
सर्वेश्वराय शांताय शरभाय नमो नमः।।१४।।

वरदाय वरांगाय वामदेवाय शूलिने।
गिरिशाय गिरीशाय गिरिजापतये नमः।।१५।।

कनक-जठरकोद्यद्रक्त पानोन्मदेन
प्रथित-निखिल-पीडा नारसिंहेन जाता।
शरभ हर शिवेश त्राहि नः सर्वापापा-
दनिशमिह कृपाब्धे सालुवेश प्रभो त्वम्।।१६।।

सर्वेश सर्वाधिकशांतमूर्ते कृतापराधानमरानथान्यान्।
विनीयविश्व-विधायि नीते नमोऽस्तु तुभ्यं शरभेश्वराय।।१७।।

दंष्ट्रानखोग्रः शरभः सपक्षश्चतुर्भुजश्चाष्टपदः सहेतिः।
कोटीर-गंगेन्दुधरो नृसिंहक्षोभापहोस्मद्रिपुहास्तु शंभुः।।१८।।

हुङ्कारी शरभेश्वरोष्टचरणः पक्षीचतुर्बाहुकः
पादाकृष्ट-नृसिंह-विग्रहधरः कालाग्नि-कोटि-द्युतिः।

विश्व-क्षोभहरः सहेतिरनिशं ब्रह्मेन्द्र मुख्यैः स्तुतो
गंगाचंद्रधरः पुरत्रयहरः सद्यो रिपुघ्नोऽस्तु नः।।१९।।

मृगांग लांगूल सचंचु-पक्षो दंष्ट्राननांघ्रिश्च भुजासहस्रः।
त्रिनेत्र गंगेन्दुधरः प्रभाढ्यः पायादपायाच्छरभेश्वरो नः।।२०।।

नृसिंहमत्युग्रमतीवतेजः प्रकाशितं दानव-भंग-दक्षम्।
प्रशांतिमंतं विदधाति यो मां सोऽस्मानपायाच्छरभेश्वरो नः।।२१।।

योऽभूत्सहस्रांशु-शत-प्रकाशः स पक्षि-सिंहाकृतिरष्टपादः।
नृसिंह-संक्षोभशमात्तरूपः पायादपयाच्छरभेश्वरो नः।।२२।।

त्वां मन्युमंतं प्रवदंति वेदास्त्वां शांतिमंतं मुनयो गृणन्ति।
दुष्टे नृसिंहजगदीश्वरे ते सर्वापराधं शरभ क्षमस्व।।२३।।

कर-चरण कृतं वाक्-कर्मजं कायजं वा
श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमंविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
शिव शिव करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो।।२४।।

रुद्रः शंकर ईश्वरः पशुपतिः स्थाणुः कपर्दी शिवो
वागीशो वृषभध्वजः स्मरहरो भक्तप्रियस्त्र्यंबकः।
भूतेशो जगदीश्वरश्च वृषभो मृत्युंजयः श्रीपति-
र्योऽस्मान् कालगलोऽवतात्पुरहरः शंभुः पिनाकी हरः।।२५।।

यतो नृसिंहं हरसि हर इत्युच्यते बुधैः।
यतो बिभर्ति सकलं विभज्य तनुमष्टधा।।२६।।

अतोऽस्मान्पाहि भगवन्प्रसीद च पुनः पुनः।
इति स्तुतो महादेवः प्रसन्नो भक्तवत्सलः।।२७।।

सुरानाह्लादयामास वरदानैरभीप्सितैः।
प्रसन्नोऽस्मि स्तवेनाहमनेन विबुधेश्वराः।।२८।।

मयि रुद्रे महादेवे भयत्वं भक्तिमूर्जितम्।
ममांशोऽयं नृसिंहोऽयं मयि भक्ततमस्त्विह।।२९।।

इमं स्तवं जपेद्यस्तु शरभेशाष्टकं नरः।
तस्य नश्यंति पापानि रिपवश्च सुरोत्तमाः।।३०।।

नश्यंति सर्वरोगाणि क्षयरोगादिकानि च।
अशेष-ग्रह-भूतानि कृत्रिमाणि ज्वराणि च।।३१।।

सर्प-चोराग्नि-शार्दूल गजपोत्रिमुखानि च।
अन्यानि च वनस्थानि नास्ति भीतिर्न संशयः।।३२।।

इत्युक्त्वान्तर्दधे देवि देवान् शरभ सालुवः।
ततस्ते स्व-स्वधामानि ययुराह्लादपूर्वकम्।।३३।।

एतच्छरभकं स्तोत्रम् मन्त्रभूतम् जपेन्नरः।
सर्वान्कामानवाप्नोति शिवलोकम् च गच्छति।।३४।।

इति श्री आकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे शरभेशाष्टक-स्तोत्र-मन्त्रम्।

शरभ कवचम्

।। श्री देव्युवाच ।।

सर्वज्ञ सर्वमन्त्रस्य सर्वाचार्य शिव प्रभो।
शरभं कवचं दिव्यं सर्वरक्षाकरं परम्।।
वज्रपंजर नामाख्यं वद मे करुणाकर।

।। श्रीशिव उवाच ।।

वक्ष्यामि श्रृणु देवेशि सर्व लक्षणमद्भुतम्।
शरभं कवचं नाम्ना चतुर्वर्गफलप्रदम्।।

शरभ-सालुव-पक्षिराजाख्य कवचस्य तु।
सदाशिव ऋषिश्छंदो वृहती शरभेश्वरः।।

देवता प्रणवं वीजं प्रकृतिः शक्तिरुच्यते।
कीलकं पक्षिराजाय सर्वरक्षाकरोविभुः।।

पर-प्रयोग-शान्त्यर्थ सर्वशत्रुनिवृत्तये।
चतुर्वर्गार्थ-सिध्यर्थे विनियोगोऽथ भावना।।

।। ध्यानम् ।।

रक्ताभं सुप्रसन्नं त्रिनयनममृतोन्मत्त भाषाभिरामम्
कारुण्यांभोधिमीशं वरदमभयदं चन्द्ररेखावतंसम्।
शंख-ध्माताखिलाशाप्रतिहतविधिना भासमानात्म-भावम्
सर्वेशं सालुवेशं प्रणतभयहरं पक्षिराजं नमामि।।

ओं श्री शिवः पुरतः पातु मायाधीशस्तु पृष्टतः।
पिनाकी दक्षिणं पातु वामपार्श्वं महेश्वरः।।१।।

शिखाग्रं पातु मे शंभुर्निटिलं पातु शंकरः।
ईश्वरो वदनं पातु भ्रवोर्मध्यं पुरान्तकः।।२।।

भ्रुवौ पातु मम स्थाणुः कपर्दी पातु लोचने।
शर्वो मे श्रोत्रयोः पातु वागीशः पातु लंबिकाम्।।३।।

नासयोर्मे वृषारुढो नासाग्रं वृषभध्वजः।
स्मरारिः पातु मे ताल्वेरोष्टयोर्भक्तवत्सलः।।४।।

जिह्वां मम सदा पातु सर्वविद्या प्रदायकः।
पातु मृत्युंजयोदन्तान् चिबुकं पातु भूतराट्।।५।।

परमेशः कपोलौ मे त्रिकं पातु कपाल भृत्।
कण्ठम् पशुपतिः पातु शूली पातु हनू मम।।६।।

स्कंधद्वयं हरः पातु धूर्जटि पातु मे भुजौ।
भुजसंधिं महादेव ईशानो मे प्रकूपरे।।७।।

मध्यसंधी जगन्नाथः प्रकोष्ठे चन्द्रशेखरः।
मणिबन्धौ त्रिनेत्रो मे भीमः पातु करस्थले।।८।।

करपृष्ठे मृडः पातु रुद्रोऽगुंष्ठद्वये मम।
उमासहायस्तर्जन्यौ भर्गो मे पातु मध्यमे।।९।।

अनामिके करांलास्यः कालकंठः कनिष्ठिके।
गंगाधरोऽङ्गुलीपर्वाण्यप्रमेयोनखानि मे।।१०।।

वक्षस्तत्पुरुषः पातु कक्षे दक्षाध्वरान्तकः।
अघोरो हृदयम् पातु वामदेव स्तनद्वयम्।।११।।

भालदृक् जठरं पातु नाभिं नारायणप्रियः।
कुक्षौ प्रजाकरः पातु कुक्षिपार्श्वे महाबलः।।१२।।

सद्योजातः कटी पातु पृष्ठभागं तु भैरवः।
मोहनोजघनं पातु गुदं मम जितेन्द्रियः।।१३।।

ऊर्ध्वरिता लिङ्गदेशं वृषणं विश्वमोहनः।
ऊरूद्वयं भवः पातु जानुयुग्मं भवांतकः।।१४।।

हुंकारः पातु मे जंघे फट्कारो मम गुल्फके।
वषट्कारः पादपृष्ठे वौषट्कारोंऽघ्रिणस्तले।।१५।।

स्वाहाकारोंऽगुलीपार्श्वे स्वधाकारोङ्गुलीर्मम।
त्वरितः सर्व संधीन्मे रोमकूपाणि सिंहजित्।।१६।।

त्वचं पातु मनोवेगः कालजिद् रुधिरं मम।
पुष्टिदः पातु मे मांसं मेदो मे स्वस्तिदोऽवतु।।१७।।

सर्वात्मास्थिचयं पातु मज्जानं मे जगत्प्रभु।
शुक्रं वृद्धिकरः पातु बुद्धिं वाचामधीश्वरः।।१८।।

मूलाधाराम्बुजं पातु भगवान् शरभेश्वरः।
स्वाधिष्ठानमजः पातु मणीपूरं हरिप्रियः।।१९।।

अनाहतं सालुवेशोविशुद्धं जीवनायकः।
सर्वज्ञानप्रदोह्याज्ञां ललाटं मे सदाशिवः।।२०।।

ब्रह्मरन्ध्रं महादेवः पक्षिराजोऽखिलात्मवान्।
सर्वलोकवशीकारः पातु मां परगर्वजित्।।२१।।

वज्र-मुष्टि-वराभीतिहस्तः कालाभ्रसन्निभः।
विजया सहितः पातु चैन्द्रीं ककुभमग्निजित् ।।२२।।

शक्ति-शूल-कपालासिहस्तः सौदामिनीप्रभः।
जयायुतो महाभीमः पातु वैश्वानरीं दिशम्।।२३।।

दंडासि-मुसलं-हाल-पाशांकुश-कराम्बुजः।
यमांतकोऽजितायुक्तोयाम्यीं पातु दिशं ममः।।२४।।

खड्ग-खेटासि-परशुहस्त-शत्रुविमर्दनः ।
अपराजितया युक्तः सदाव्यान्नैर्ऋतिं दिशम्।।२५।।

पाशांकुश-धनुर्बाण-पाणिघोणियुतोऽग्रकः।
हरिद्राभोऽनिशं पायाद्वारुणीं दिशमात्मजित्।।२६।।

ध्वज-चक्रयुतोदारिभुजो दुर्गा युतोऽर्गलः।
चण्डवेगः शिवः पायात्सततं मारुतीं दिशं।।२७।।

गदास्त्रग्वरदाभीति कराम्भोज श्रियायुतः।
कनकाभो महातेजः पातु कौवेरकीदिशम्।।२८।।

त्रिशूलाहि-कपालाग्निदोस्तलोविद्ययायुतः।
भस्मोद्धूलितसर्वांग ऐशीं पात्वपराजितः।।२९।।

जपास्त्रक्-पुस्तकाम्भोजकमण्डलुं कराम्बुजः।
ऊर्ध्वं पातु गिरायुक्तः सर्वभूतहितेरतः।।३०।।

शंख-चक्र-गदाऽभीति-हस्तःपद्मायुतोऽव्ययः।
कालाञ्जनसमोनीलः पातालं पात्वनारतम्।।३१।।

अनुक्ता विदिशः पातु सालुवो नारसिंहजित्।
शरभः पातु संग्रामे युद्धे वैरिकुलान्तकः।।३२।।

सर्वसौभाग्यदः पातु जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्तिषु।
सर्वसम्पत्प्रदः पातु धनधान्यादिकं मम।।३३।।

सन्तानदः सुतान्पातु दारानायुष्करोऽनिशम्।
बन्धून्वृद्धिकरः पातु गृहं सर्ववशंकरः।।३४।।

ग्रामं ग्रामेश्वरः पातु राज्यं पातु दिगम्बरः।
राष्ट्रं शान्तिकरः पातु राजानं धर्मशासकः।।३५।।

मार्गं दुष्टहरः पातु धर्मकर्माणि भैरवः।
बटुकः पातु मे सर्वं त्र्यवस्थासु भयेषु च।।३६।।

स्पर्श-वीक्षण-संयुक्तः प्राणरक्षां मनोजवः।
[१]प्रधानमूर्तिंभावश्च प्रासादेष्वाशुसिद्धिकृत्।।३७।।

साधकः प्रणवं बीजं नमो भगवतेति च।
प्रतिनाम चतुर्थ्यंतं स्पर्श इत्यभिधीयते।।३८।।

द्विर्ज्वल-प्रज्वले साध्यं साधय द्विर्द्वि रक्ष तत्।
सर्वदुष्टेभ्यो हुं फट् स्वाहान्त युग्-वीक्षणम्।।३९।।

स्पृशन् पश्यन् जपं कृत्वा प्रतिस्थानं समाहितः।
प्रार्थयेदखिलं स्वेष्टं हृदिस्थं सालुवेश्वरम्।।४०।।

ये ग्रामघातकाः क्रूराः कपटा दौष्टिका भटाः।
तस्कराः शत्रवः क्रुद्धा वधे सक्ताः पलाशनाः।।४१।।

छद्मचाराः विटाः भ्रष्टास्दिवाचर-निशाचराः।
ते सर्वे पक्षिराजस्य पक्षवातपराहताः।।४२।।

स्त्री-बाल-सहिताः क्षिप्रं पितृ-मातृ कुलान्विताः।
भग्नचित्ता गतस्थाना यांतु देशांतरं स्वयम्।।४३।।

ये च दुष्टग्रहा रक्षःपिशाचाः देवयोनयः।
चतुःषष्टिगणाः सप्तसप्तत्युन्मादका ग्रहाः।।४४।।

अष्टाशीति महाभूताः सप्तकोटि महाग्रहाः।
नवति ज्वरभेदाश्च शत-भेदाश्च कृत्तिकाः।।४५।।

पंचाशद् गणनाथाश्च नियुता कृत्रिमा ग्रहाः।
प्रेतारूढास्त्रयस्त्रिंशत्पिंडदान परायणाः ।।४६।।

अयुतं क्षुद्र-भेदाश्च चत्वारिंशच्छिवाह्वयाः।
द्वात्रिंशद्वह्निवक्त्राश्च त्रिंशन्मार्जारवक्त्रकाः।।४७।।

---

१. ॐ नमो भगवते श्री शिवाय मम पुरतः ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल साध्यं साधय साधय सर्वदुष्टेभ्यो हुं फट् स्वाहा – श्री शिवः पुरतः पातु।। एवं सर्वत्र०।

चतुःषष्ट्याखुरूपाश्च ये चान्ये क्षुद्रयोनयः।
ते सर्वे सालुवेशस्य शंख-निःस्वन-मोहिताः।।४८।।

विषण्णाः खिलतः स्वांताः प्राण-त्राण-परायणाः।
गच्छन्तु सम्प्रयोक्तारो देशान्तरमनिच्छया।।४९।।

ये च मूषक-वैडालाः शुनकोरगवृश्चिकाः।
आशीविषाः शिवा व्याला व्याघ्र ऋक्षेभसूकराः।।५०।।

गृध्राः श्येनाः खगाः कंका दंशका भ्रशंका मृगाः।
एते शरभहस्ताग्र-नख-क्षतविमोक्षगाः।।५१।।

स्रवद्रक्ततलासिक्ताः शिलातलनिपीडिताः।
संभिन्नतनवः शीघ्रं नश्यंत्वखिलदुश्चराः।।५२।।

न दंशंतूरगाः क्वापि नातिवातोऽपि वीजतु।
न दहत्वसहो वह्निरायांत्वापो न चाधिकाः।।५३।।

न वर्षत्वतिवृष्टिश्च न पतत्वशनिः क्वचित्।
नाक्रामत्वपमृत्युश्च नास्त्युत्पातं कदाचनं।।५४।।

न म्रियंत्वंभसि जना न भवत्वशुभं क्वचित्।
न वदंत्वसहं वाक्यं जंतवो मम देशके ।।५५।।

नास्ति वैरं तु जंतूनामन्योऽयं राजके मम।
भवंतु सुखिनः सर्वे नार्यः संतु पतिव्रताः।।५६।।

सर्वाः सूयंतु सत्पुत्रान् पुत्रीश्च शुभलक्षणाः।
सर्वे देवाश्च नंदंतु संतु कल्याणकारकाः।।५७।।

राजन्वती मही चास्तु राजा भवतु धार्मिकः।
ससंस्रवं-पयोगावः फलंत्वोषधयोऽधिकम्।।५८।।

भवन्तु फलदा वृक्षाः सिद्धिर्भवतु मेऽखिला।
ममास्तु तरसा नूनमात्मज्ञानमचंचलम्।।५९।।

महाक्रोध-महालोभाः समदा लोभ मत्सराः।
न संतु क्वापि मे सर्वे भगवन्करुणानिधे।।६०।।

शरभेश्वर विश्वेश पक्षिराज दयानिधे।
देहि मे ह्यचलां भक्तिं प्रणतोऽस्मि पुनः पुनः।।६१।।

गौरिवल्लभ कामारे कालकूटविषादन।
मामुद्धरापदंभोधेस्त्रिपुरघ्नांतकांतक ।।६२।।

सालुवेश जगन्नाथ सर्वभूतहिते रत।
पाहि मां तरसा चौरान् दुष्टान्नाशय नाशय।।६३।।

कालभैरव विश्वेश विश्वरक्षापरायण।
रक्ष मूषक-चौरेभ्यो धान्यराशिमिमं प्रभो।।६४।।

पक्षिराज महादेव प्रणतार्तिविनाशन।
मदीयानि पदार्थानि नित्यं पालय पालय।।६५।।

सर्वज्ञ सर्वलोकेश सर्वदुष्टविनाशन।
तस्करेण हृतं वस्तु द्रुतं दापय दापय।।६६।।

ये मर्मवादिनः क्षुद्राः छिद्रोपद्रवकारकाः।
सर्वाचार-परिभ्रष्टा मानहीनाश्च रोधकाः ।।६७।।

ते सर्वे सालुवेशस्य मुसलायुधचूर्णिताः।
नश्यंतु निमिषार्धेन पावकावृततूलवत्।।६८।।

ये जना द्रोहिणोऽश्लाघ्यास्त्वकालोचितभाषणाः।
सत्कर्म विघ्नकर्तारः शांत भर्त्सापरायणाः।।६९।।

ते सालुवेश हस्ताग्र-खड्ग निर्भिन्नदेहिनः।
पतंतु भूतले याम्यां प्राणास्तेषां प्रयांत्वरम्।।७०।।

त्वदंघ्रि ध्यान निर्दग्ध पापकोशाय मंत्रिणे।
मह्यं द्रुह्यंति ये तेषां विभवानि क्षयंत्वरम्।।७१।।

त्वदाचारं परं भक्तं साधकानां विवेकिनम्।
य आक्रमंति संग्रामे ते गच्छन्तु पराहताः।।७२।।

त्वदीयेनैव मार्गेण संचरंतं जपातुरम्।
ये वदंति परीवादे भ्रांताः शीघ्रं भवंतु ते।।७३।।

त्वद्दासममलं धीरं ये मां तर्जयितुं बलात्।
मनसा ये न मन्यंते तत्स्वांतं भ्रमतु क्षणात्।।७४।।

मनसा कर्मणा वाचा ये कुर्वंत्यतिदुःसहम्।
ते महाशोक रोगाब्धौ पतंत्वाशु शिवाज्ञया।।७५।।

मदीयानि पदार्थानि गृहीतुं योऽवलोकते।
तत्क्षणादेव नष्टाक्षो भवत्वाश्वीश्वराज्ञया।।७६।।

मदीयं द्रव्यमादाय ये गच्छन्तीह तस्कराः।
सिंहारि-पाश-सम्बद्धास्ते चरंतु प्रदक्षिणम्।।७७।।

सीमातीताश्च ये चौरा गृहीतद्रव्यसंचयाः।
अवशावयवास्ते तु आगच्छन्तु शिवाज्ञया।।७८।।

तस्कराः निम्नगातीताः स्वान्त-धान्य-धनाधिकाः।
पक्षिराजांकुशाकृष्टाः समागच्छन्तु मद्गृहम्।।७९।।

समाहृत-पदार्थाद्या देशातीताश्च तस्करा।
शरभेश-हलाकृष्टास्ते आगच्छन्तु वै द्रुतम्।।८०।।

चौरा ग्रहीतुमुद्युक्ताः समागच्छन्ति मद्गृहे।
ते सालुवेशपक्षोत्थवातैर्गच्छन्तु सत्वरम्।।८१।।

शान्तं विवेकिनं भक्तं त्वदंघ्रि ध्यानतत्परम्।
ब्रुवंति ये सहप्राणास्तेषां यांति यर्मी पुरीम्।।८२।।

षट्त्रिंशत्कोष्टके यन्त्रे रेखाशूलाग्रसाध्यके।
स्वेच्छामन्त्रं लिखित्वा तु जपेदाराध्य साधकः।।८३।।

मध्ये पाशांकुशे वह्नि साध्य नाम लिखेत्क्रमात्।
उदङ्मुखः सहस्त्रं तु रक्षणाय जपेन्निशि।।८४।।

नष्टाहरणके पंचरात्रं पश्चिम-दिङ्मुखः।
मारणे सप्तरात्रं तु दक्षिणाभिमुखो जपेत्।।८५।।

रोगनिग्रहणे चाष्टरात्रमाग्नेयदिङ्मुखः।
इति गुह्यं महामन्त्रम् परमं सर्वसिद्धिदम्।।८६।।

शरभेशाख्य-कवचं चतुर्वर्गफलप्रदम्।
प्रत्यहं प्रतिपक्षं वा प्रतिमासमथापि वा।।८७।।

यो जपेत्प्रतिवर्षं वा वरेण्यः स शिवो भवेत्।
एवं हि जपतः पुंसां पातकं चोपपातकम्।।८८।।

तत्सर्वं लयमाप्नोति रविणा तिमिरं यथा।
दशाब्दं यो जपेन्नित्यं प्रातरुत्थाय साधकः।।८९।।

सर्वसिद्धिं समाश्लिष्य देहांते स शिवो भवेत् ।
त्रिकालं ध्यानपूर्वं तु जपेद् द्वादश-वार्षिकम् ।।
कायेनानेन सो देवि जीवन्मुक्तो भवेन्नरः।।९०।।

शतवारं जपेन्नित्यं मण्डलं यो वरानने।
सोऽणिमादिगुणान् प्राप्य विचरेत्स्वेच्छया सदा।।९१।।

अतलादिधरण्यादि भुवनानि चतुर्दश।
विचरेत्कामतः सर्वैः पूज्यमानो यथासुखम्।।९२।।

त्रिमासं यो जपेन्नित्यमष्टोत्तरसहस्त्रकम्।
सहसा शरभेशस्य सारूप्यं लभतेऽम्बिके।।९३।।

षण्मासं यो जपेद्देवि प्रयतस्तु दृढव्रतः।
मद्रूपधारको मर्त्यः सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।९४।।

मम लोके सम्पूज्यो विष्णुलोके विशेषतः।
ब्रह्मलोके च रमते सर्वत्र न निवार्य्यते।।९५।।

इन्द्राग्नियमरक्षेशजलेशपवनैः सह।
सोमेशैः सह रुद्रेशैर्दिशांपालैः स पूज्यते।।९६।।

आदित्य-सोम-पृथ्वीज-बुध-श्री-गुरु-भार्गवैः।
पूज्यते स ग्रहैः सर्वैस्सशनि-राहु-केतुभिः।।९७।।

भृग्वंगिरः-पुलस्त्यैश्च पुलहात्रि-मरीचिभिः।
दक्ष-कश्यप-भृग्वाद्यैर्योगिभिश्च स पूज्यते।।९८।।

भैरवैर्वसुभी रुद्रैरादित्यैर्बालखिल्यकैः।
दिग्गजैश्च महानागैर्दिव्यास्त्रैर्दिव्यवाहनैः।।९९।।

माहेश्वरैर्महारत्नैः कामधेनु-सुरद्रुमैः।
सरिद्भिः सागरैः शैलैर्देवताभिस्तपोधनैः।।१००।।

दानवै राक्षसैः क्रूरैः सिद्ध-गंधर्व-किन्नरैः।
यक्ष-विद्याधरैर्नागैरैप्सरोभिश्च पूज्यते।।१०१।।

अपस्मार-ग्रहैभौमैरुन्मते ब्रह्मराक्षसैः।
वेतालैः खेचरैर्मर्त्यैः कूष्मांडै राक्षसग्रहैः।।१०२।।

ज्वालावक्त्रैस्तमोहारैः स्त्रीग्रहैः पावकग्रहैः।
भूत-प्रेत-पिशाचाद्यैर्ग्रहैः सर्वैः स पूज्यते।।१०३।।

ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः शूद्रैरन्यैश्च जातिभिः।
पशु-पक्षि-मृग-व्यालैः पूज्यते सर्वजंतुभिः।।१०४।।

किमत्र बहुना देवि तव क्ष्येऽहं यथातथम्।
मया च विष्णुना चैव विश्वकर्त्रा च कल्प्यते।।१०५।।

भवत्या च गिरा लक्ष्म्या ब्रह्माण्याद्यष्टमातृभिः।
गणेश्वरादियोगीन्द्रैर्यौगिनीभिः स पाल्यते।।१०६।।

य इदं प्रजपेद्भक्त्या तस्यासाध्यं न विद्यते।
कवचेन्द्रं महामंत्रं जपेत्तस्मादनुत्तमम्।।१०७।।

उच्चाटने मरुद्वक्त्रो विद्वेषे राक्षसाननः।
प्रागाननोऽभिवृद्धौ तु सर्वेष्वीशानदिङ्मुखः।।१०८।।

यो जपेत्कवचं नित्यं त्रिकालं ध्यान-पूर्वकम्।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति सहसा साधकोत्तमः।।१०९।।

।। श्रीदेव्युवाच ।।

देवदेव महादेव शिव कारुण्यवारिधे।
पाहि मां प्रणतं स्वामिन्प्रसीद सततं मम।।११०।।

सर्वार्थसाधनोपाय सर्वैश्वर्य-प्रदायक।
समस्तापत्प्रतीकार चंद्रशेखर ते नमः।।१११।।

यत्कृत्यं यन्न कृत्यं तत्तदाचरितम्।
उभयोःप्रायश्चित्तं शिव तव नामाक्षर द्वयोच्चरितम्।।११२।।

इति श्री आकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे
उमामहेश्वरसम्वादे शरभकवचं

श्री मच्छरभ-सालुव अष्टोत्तर शतनाम- स्तोत्रम्

।। श्रीशिव उवाच ।।

विनियोग –

अस्य श्रीशरभाष्टोत्तरशतनाम-महामंत्रस्य योगानंद ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमदघोर-वीर-शरभेश्वरो देवता खं बीजं स्वाहाशक्तिः फट् कीलकम् श्रीमच्छरभ-सालुव अष्टोत्तरशतनाम[१] सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

।। ध्यानम् ।।

अष्टांघ्रिंश्च सहस्रबाहुरनलच्छाया शिरोयुग्धृग्-
यस्त्र्योक्षो द्विखु[२]... पुच्छाउदितः साक्षान्नृसिंहासनः।।
अर्धेनापि मृगाकृतिः पुनरथाप्यर्धेन पक्ष्याकृतिः।
श्री वीरः शलभ स पातु शलभश्चिन्त्यः सदा मां हृदि।।१।।

सदा शिवोग्ररूपाय पक्षविक्षिप्तभूभृते।
नमो रुद्राय रौद्राय महोग्रा[३]साय जिष्णवे।।२।।

नम उग्राय भीमाय नमः क्रुद्धाय मन्यवे।
नमो भवाय शर्वाय शंकराय शिवाय च।।३।।

---

१. प्रसाद   २. द्विखुरप्र   ३. महोग्रासाय

कालाय कालकालाय महाकालाय मृत्यवे।
वीराय वीरभद्राय क्षयद्वीराय शूलिने।।४।।

महादेवाय महते पशूनां पतये नमः।
एकाय नीलकण्ठाय श्रीकण्ठाय पिनाकिने।।५।।

नमोऽनंताय सूक्ष्माय नमस्ते मृत्यु-मृत्यवे।
पराय परमेशाय तत्पराय परात्मने।।६।।

परात्पराय विश्वाय नमस्ते विश्वमूर्तये।
नमो विष्णुकलत्राय विष्णुक्षेत्राय भानवे।।७।।

वैकर्ताय किराताय महाव्याधाय शाश्वते।
भैरवाय शरण्याय महाभैरवरूपिणे।।८।।

नमो नृसिंह-संहर्त्रे काम-काल-पुरारये।
कर्मपाशौघसंहर्त्रे विष्णुमायांतकारिणे।।९।।

त्र्यंबकाय च त्र्यक्षाय शिपिविष्टाय मीढुषे।
मृत्युञ्जयाय रुद्राय सर्वज्ञाय मखारये।।१०।।

खखोल्काय वरेण्याय नमस्ते वाग्भिरेतसे।
महाप्राणाय देवाय प्राणापानप्रवर्तिने।।११।।

त्रिगुणाय त्रिशूलाय गुणातीताय योगिने।
संसारचक्रवाहाय महायंत्रप्रवर्तिने।।१२।।

तमस्विद्व्योमसूर्याय मुक्तिवैचित्रहेतवे।
वरदाय विकाराय सर्वकारणहेतवे।।१३।।

कपालिने करालाय पतये पुण्यकीर्तये।
अमोघायाग्निनेत्राय नकुलीशाय शंभवे।।१४।।

भीषांबराय चण्डाय दण्डिने घोररूपिणे।
मेघवाहाय देवाय पार्वतीपतये नमः।।१५।।

अव्यक्तायाप्यशोकाय स्थिराय स्थिरधन्विने।
स्थाणवे कृत्तिवासाय नमश्चंद्रार्द्ध मौलये।।१६।।

नमस्तेऽध्वरराजाय वचसां पतये नमः।
योगीश्वराय नित्याय सत्याय परमात्मने।।१७।।

सर्वात्मने नमस्तुभ्यं नमः सर्वस्वराय च।
एक-द्वित्रि-चतु-पंच-सृष्टिकृत्यस्तुते नमो नमः।।१८।।

दशकृत्वः शतकृत्वः सहस्रकृत्वो नमो नमः।
नमो परिमिते कृत्वो नमः कृत्वो नमो नमः।।१९।।
नमो भूयो नमो भूयो पुनर्भूयो नमो नमः।

।। सूत उवाच ।।

नाम्नामष्टशतेनैव स्तुत्वामृतमयेन च।।२०।।

तथा तथा विनीतव्यस्त्वयैव परमेश्वर।
एवं विज्ञाप्य सव्रीडं शंकरं नरकेसरम्।।२१।।

ततस्तुत्वा च भगवान् जीवितं सापराधतः।
तद्वक्त्रशेषं तद्गात्रं कृत्वा शरभ-विग्रहः।।२२।।

अतीन्द्रियत्वमगमद्वीरभद्रेक्षणात्ततः ।
अद्य ब्रह्मादयः सर्वे वीरभद्रस्य तेजसा।।२३।।

।। देवा ऊचुः।।

जीवितास्स्मो वयं देवाः पर्जन्येनैव पादपाः।
अस्माद्भीषादहत्यग्निरुदेति च रविः शशी।।२४।।

वातो वाति च भीषास्य मृत्युर्धावति पंचमः।
तद्व्यक्तं परमं व्योम कलातीतं सदाशिवः।।२५।।

भवंतमेव भगवान्वदंति ब्रह्मवादिनः।
किं वयं तव पादाब्ज-वदने परमेश्वरः।।२६।।

नांगीकुर्वन्यजात्यंघं रूपलावण्यदर्शने।
उपसर्गेषु सर्वेषु त्रायस्वास्मान्नराधिप।।२७।।

एकादशात्मभगवन् दुःखं नः कृपया हर।
ईदृशान्यवताराणि दृष्ट्वापि बहुशस्तव।।२८।।

न विद्मस्ते परं भावं वंचितास्तव मायया।
देव देव महादेव भीतान्नः पाहि सर्वशः।।२९।।

त्वं पिता सर्वलोकानां नाथस्त्वं त्वं गुरुः सुहृत्।
विश्वेश्वर विरूपाक्ष भगवन्करुणाकर।।३०।।

अस्माभिः सह गंतव्यं तत्क्षंतव्यं परात्पर।
द्वे तनू तव रुद्रस्य वेदज्ञा ब्राह्मणा विदुः।।३१।।

घोर एका शिवा अन्या ते प्रत्येकमनेकधा।
घोरा तव तनू ब्रह्मन् सूर्यो विष्णुर्हु ताशनः।।३२।।

शिवा तव तनू ब्रह्मा आपो धर्मश्च चन्द्रमाः।
उभाम्यां पाहि भगवन्भीतिभ्योऽस्मान्महाबलः।।३३।।

भवतेदं जगत्सर्वं व्याप्तं स्वेनैव तेजसा।
ब्रह्माविष्णुर्वर्कशक्राग्नि-जलधर्मपुरोगमाः।।३४।।

सुरासुराः सुप्रभूतास्त्वत्तः सर्व महेश्वर।
ब्रह्माणमिंद्रं विष्णुं च यान्तु मृत्युं सुरा नराः।।३५।।

यतो निगृह्य हरसि हर इत्युक्तं वेदवित्।
इदं परममाख्यानं पुण्यं सर्वाघनाशनम्।।३६।।

इति श्रीआकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे
शरभाष्टोत्तरशतनाम्

श्री मच्छरभ सहस्रनाम स्तोत्रं

।। श्रीशिव उवाच ।।

विनियोग –

अस्य श्री शरभ सहस्रनाम-स्तोत्र-मंत्रस्य कालाग्नि-रुद्रो-वामदेव।। ऋषिः अनुष्टुपछन्दः शरभ-सालुवो देवता हस्रां बीजं स्वाहा।। शक्तिःफट्-कीलकं शरभ-सालुव प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।।

ओं हस्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः – हृदयाय नमः
ओं हस्रीं तर्जनीभ्यां नमः – शिरसे स्वाहा
ओं हस्रूं मध्यमाभ्यां नमः – शिखायै वषट्
ओं हस्रैं अनामिकाम्यां नमः – कवचाय हुम्
ओं हस्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः – नेत्रत्रयाय वौषट्
ओं हस्रः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः – अस्त्राय फट्
ओं भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

।। ध्यानम् ।।

क्वाकाशः क्व समीरणः क्व दहनः क्वापः क्व विश्वंभरः
क्व ब्रह्मा क्व जनार्दनः क्व तरणिः क्वेन्दुः क्व देवासुराः।
कल्पांते शरभेश्वरः प्रमुदितः श्रीसिद्धयोगीश्वरः

क्रीडा-नाटक-नायको विजयते देवो महासालुवः।।१।।
लं पृथिव्यादि पंचोपचारैः सम्पूज्य –

।। श्री भैरव उवाच ।।

श्री नाथो रेणुकानाथो जगन्नाथो जगाश्रयः।
श्री गुरुर्गुरुगम्यश्च गुरुरूपः कृपानिधिः।।१।।

हिरण्यबाहुः सेनानी दिक्पतिस्तरुराट्हरः।
हरिकेशः पशुपतिर्महांसःपिंजरो मृडः।।२।।

गणेशो गणनाथश्च गणपूज्यो गणाश्रयः।
विव्याधिर्बभ्लशः श्रेष्ठः परमात्मा सनातनः।।३।।

पीठेशः पीठरूपश्च पीठपूज्यः सुखावहः।
सर्वाधिको जगत्कर्ता पुष्टेशो नंदिकेश्वरः।।४।।

भैरवो भैरव-श्रेष्ठो भैरवायुधधारकः।
आततायी महारुद्रः संसारार्क-सुरेश्वरः।।५।।

सिद्धःसिद्धिप्रदः साध्यः सिद्धमण्डलपूजितः।
उपवीती महानात्मा क्षेत्रेशो वननायकः।।६।।

बहुरूपो बहुस्वामी बहुपालनकारणः।
रोहितः स्थपतिः सूतो वाणिजो मंत्रिरुन्नतः।।७।।

पदरूपः पदप्राप्तः पदेशः पदनायकः।
कक्षेशोऽहुः भूतदेवो भुवं तिर्वारिवस्कृतः।।८।।

दूतिक्रमो दूतिनाथः शांभवः शंकरः प्रभुः।
उच्चैर्घोषो घोषरूपः पत्तीशः पापमोचकः ।।९।।

वीरो वीर्यप्रदः शूरो वीरेशो वीरदायकः।
ओषधीशः पंचवक्त्रः कृत्स्नवीतो भयानकः।।१०।।

वीरनाथो वीररूपो वीर-आयुधधारकः।
सहमानः स्वणरितो निर्व्याधि निरुपप्लवः।।११।।

चतुराश्रमनिष्ठश्च चतुर्मूर्तिश्चतुर्भुजः।
आव्याधिनीशः ककुभो निषंगी स्तेनरक्षकः।।१२।।

षष्टीशो घटिक्साफारूपः फलसंकेतवर्धकः।
मंत्रात्मा तस्कराध्यक्षो वंचकः परिवंचकः।।१३।।

नवनाथो नवांकस्थो नवचक्रेश्वरो विभुः।
अरण्येशः परिचरो निचेयुस्तायुरक्षकः।।१४।।

वीरावलीप्रियः शांतो युद्ध-विक्रम-दर्शकः।
प्रकृतेशो गिरिचरः कुलिंचेशो गुहेष्टदः।।१५।।

पंचपंचकतत्वस्थस्तत्वातीत स्वरूपकः।
भवः शर्वो नीलकंठः कपर्दी त्रिपुरान्तकः।।१६।।

श्रीमंत्र श्रीकलानाथः श्रेयदः श्रेयवारिधिः।
मुक्तकेशो गिरिशयः सहस्राक्षः सहस्रपात्।।१७।।

मालाधरो मनःश्रेष्ठो मुनिमानसहंसगः।
शिपिविष्टश्चन्द्रमौली हंसो मीढुष्टमोऽनघः।।१८।।

मंत्रराजो मंत्ररूपो मंत्रपुण्यफलप्रदः।
उर्व्यःसूर्म्योद्ग्रीयशीभ्यः प्रथम-पावकाकृतिः।।१९।।

गुरुमण्डलरूपस्थो गुरुमण्डलकारणः।
अचरस्तारकस्तारो वस्वन्योऽनंतविग्रहः।।२०।।

तिथि-मण्डल-रूपश्च वृद्धि-क्षयविवर्जितः।
द्वीप्यः स्रोतस्य ईशानो धुर्यो गव्य-यतोमयः।।२१।।

प्रथमः प्रथमाकारो द्वितीयः शक्तिसंयुतः।
गुणत्रय-तृतीयोऽसौ युगरूपश्चतुर्थकः।।२२।।

पूर्वजो वरजो ज्येष्ठः कनिष्ठो विश्वलोचनः।
पंचभूतात्मा साक्षीशो ऋतुःषड्गुणभावनः।।२३।।

अप्रगल्भो मध्यमोर्म्योजघन्योऽजघन्यः शुभः।
सप्तधातुस्वरूपश्च अष्टमः सिद्धिसिद्धिदः।।२४।।

प्रतिसर्पोऽनन्तरूपो सोभ्यो याम्य सुराश्रयः।
नवनाथ-नवम्यस्थो दिशादिग्रूपधारकः।।२५।।

रुद्र एकादशाकारो द्वादशादित्यरूपकः।
वन्यो वसान्यः पूतात्मा श्रवः कक्षः प्रतिश्रवाः।।२६।।

व्यंजनो व्यंजनातीतो विसर्गः स्वरभूषणः।
आ शुषेणो महासेनो महावीरो महारथः।।२७।।

अनंतो अव्ययो आद्यो आदिशक्ति-वरप्रदः
श्रुतसेन-श्रुतसाक्षी कवची वशकृद्वशः।।२८।।

आनंदश्चाद्यसंस्थान आद्याकारणलक्षणः।
आहनन्योऽनन्यनाथो दुंदुम्यो दुष्टनाशनः।।२९।।

कर्ता कारयिता कार्यः कार्यकारणभावगः।
घृष्णा-प्रमृश ईड्यात्मा वदान्यो वेदसम्मतः।।३०।।

कलानाथः कलातीतः काव्य-नाटक-बोधकः।
तीक्ष्णेषुपाणिः प्रहितः स्वायुधः शस्त्रविक्रमः।।३१।।

कालहन्ता कालसाध्यः कालचक्रप्रवर्तकः।
सुधन्वा सुप्रसन्नात्मा प्रविविक्तः सदागतिः।।३२।।

कालाग्निरुद्र-संदीप्तः कालांतकभयंकरः।
खड्गीशः खड्गनाथश्च खड्गशक्तिः परायणः।।३३।।

गर्वघ्नः शत्रुसंहर्ता गमागमविवर्जितः।
यज्ञकर्मफलाध्यक्षो यज्ञमूर्तिरनातुरः।।३४।।

घनश्यामो घनानंदी घनाधारप्रवर्तकः।
घनकर्ता घनत्राता घनबीजसमुत्थितः।।३५।।

लोप्यो लुप्यः पर्णसद्यः पण्यः पूर्ण पुरातनः।
डकारसंधि-साध्यानो वेदवर्णनसांगकः।।३६।।

भूतो भूतपतिर्भूपो भूधरो भूधरायुधः।
छंदःसारः छंदकर्ता छंद अन्वयधारकः।।३७।।

भूतसंगो भूतमूर्तिर्भूतिहा भूतिभूषणः।
छत्रसिंहासनाधीशो भक्तछत्रसमृद्धिमान्।।३८।।

मदनो मादको माद्यो मधुहा मधुरप्रियः।
जपो जपप्रियो जप्यो जपसिद्धिप्रदायकः।।३९।।

जपसंख्यो जपाकारः सर्वमन्त्रजपप्रियः।
मधुर्मधुकरः शूरो मधुरो मदनान्तकः।।४०।।

झषरूपधरो देवो झषवृद्धिविषर्धकः।
यमशासनकर्ता च यमपूज्यो यमाधिपः।।४१।।

निरंजनो निराधारो निर्लिप्तो निरुपाधिकः।
टंकायुधः शिवप्रीतष्टंकारो लांगलाश्रयः।।४२।।

निष्प्रपंचो निराकारो निरीहो निरुपद्रवः।
सपर्याप्रतिडामर्यो मंत्रडामरस्थापकः।।४३।।

सत्त्व-सत्त्वगुणोपेत सत्त्ववित्सत्त्ववित्प्रियः।
सदाशिवोह्युग्ररूपश्च पक्षविक्षिप्तभूभृत्।।४४।।

धनदो धननाथश्च धनधान्यप्रदायकः।
''ओं नमो रुद्राय रौद्राय महोग्राय च मीढुषे''।।४५।।

नाद-ज्ञानरतो नित्यो नादान्त-पद-दायकः।
फलरूपः फलातीतः फल-अक्षर-लक्षणः।।४६।।

ओं श्री ह्रीं क्लीं सर्वभूतान्यो भूतिहा भूतिभूषणः।
रुद्राक्षमालाभरणो रुद्राक्षप्रियवत्सलः।।४७।।

रुद्राक्षवक्षो रुद्राक्षरूपो रुद्राक्षभक्षकः।
फलदः फलदाता च फलकर्ता फलप्रियः।।४८।।

फलाश्रयः फलातीतः फलमूर्तिर्निरंजनः।
बलानंदो बलग्रामो बलीशो बलनायकः।।४९।।

ओं खें खां घ्रां ह्लां वीरभद्रः सम्राट्-दक्ष मखांतकः।
भविष्यज्ञो भयत्राता भयकर्ता भयारिहा।।५०।।

विघ्नेश्वरो विघ्नहर्ता गुरुर्देवशिखामणिः।
भावनारूपध्यानस्थो भावार्थफलदायकः।।५१।।

आं श्रां ह्लां कल्पित-कल्पस्थो कल्पना पूरणालयः
भुजंग-विलसत्कंठो भुजंगाभरणप्रियः।।५२।।

ओं ह्रीं ह्रूं मोहनोत्कर्ता छन्द मानसतोषकः।
नानातीतः स्वयं वान्यो भक्तमानंदसंश्रयः।।५३।।

नागेन्द्र-चर्म-वसनो नारसिंह-निपातनः।
रकारो अग्निबीजस्थो अपमृत्युविनाशनः।।५४।।

ओं प्रें प्रें प्रें प्रें ह्लां दुष्टेष्टा मृत्युहा मृत्युपूजितः।
व्यक्तो व्यक्ततमो व्यक्तो रतिलावण्य सुंदरः।।५५।।

रतिनाथो रतिप्रीतो निधनेशो धनाधिपः।
रमाप्रियकरो रम्यो लिंगो लिंगात्मविग्रहः।।५६।।

ओं क्ष्लों क्ष्लों क्ष्लों क्ष्लों ग्रहाकारो रत्नविक्रयविग्रहः।
ग्रहकृद् ग्रहभृद् ग्राही गृहाद् गृहविलक्षणः।।५७।।
''ओं नमः पक्षिराजाय दावाग्निरूपरूपकाय''
घोरपातकनाशाय [१]सूर्यलसु-प्रभुः''?।।५८।।

---

१. ''शलभ-शाल्वाय हुं फट्।''

पवनः पावको वामो महाकालो महापहः।
वर्धमानो वृद्धिरूपो विश्वभक्तिप्रियोत्तमः।।५९।।

ओं ह्रूं ह्रूं सर्वगः सर्वः सर्वजित्सर्वनायकः।
जगदेकप्रभुः स्वामी जगद्वंद्यो जगन्मयः।।६०।।

सर्वान्तरः सर्वव्यापी सर्वकर्मप्रवर्तकः।
जगदानंददो जन्म-जरा-मरण-वर्जितः।।६१।।

सर्वार्थसाधकः साध्य-सिद्धिः साधक-साधकः।
खट्वांगी नीतिमान्सत्यो देवतात्मात्मसंभवः।।६२।।

हविर्भोक्ता हविः प्रीतो हव्यवाहनहव्यकृत्।
कपालमालाभरणः कपाली विष्णुवल्लभः।।६३।।

ओं ह्रीं [१](प्रवेश रोगाय) स्थूलास्थूलविशारदः।
कलाधीशस्त्रिकालज्ञो दुष्टावग्रहकारकः।।६४।।

ओं हुं हुं हुं हुं नटवरो महानाट्यविशारदः।
क्षमाकर : क्षमानाथः क्षमापूरितलोचनः ।।६५।।

वृषांको वृषभाधीशः क्षमासाधनसाधकः।
क्षमाचिंतनप्रीतस्थो वृषात्मा वृषभध्वजः।।६६।।

ओं क्रों क्रों क्रों क्रों महाकायो महावक्षो महाभुजः।
मूलाधारनिवासश्च गणेशः सिद्धिदायकः।।६७।।

महास्कंधो महाग्रीवो महद्वक्त्रो महच्छिरः।
महदोष्ठो [२]महदार्यो महादंष्ट्रो महाहनुः।।६८।।

सुंदरभ्रूः सुनयनः षट्चक्रो वर्णलक्षणः।
मणिपूरो महाविष्णुः सुललाटः सुकंधरः।।६९।।

---

१. प्रे वं शं शरण्यः　　२. महदास्यो

सत्यवाक्यो धर्मवेत्ता प्रजासृज्जन-कारणः।
स्वाधिष्ठाने रुद्ररूपः सत्यज्ञः सत्यविक्रमः।।७०।।

ओं ग्लों ग्लों ग्लों ग्लों महादेव द्रव्य-शक्ति-समाहितः।
कृतज्ञः कृतकृत्यात्मा कृतकृत्यः कृतागमः।।७१।।

ओं हं हं हं हं गुरुरूपो हंस-मन्त्रार्थ मन्त्रकः।
व्रतकृद् व्रतविच्छ्रेष्ठो व्रतविद्वान्महाव्रती।।७२।।

सहस्रारे-सहस्राक्षः व्रताधारो वृतेश्वरः।
वृतप्रीतो वृताकारो वृतनिर्वाणदर्शकः।।७३।।

''ओं ह्रीं हूं क्लीं श्रीं क्लीं ह्रीं फट् स्वाहा''।
अतिरागी वीतरागः कैलासोऽनाहतध्वनिः।
मायापूरकयंत्रस्थो रोगहेतुर्विरागवित्।।७४।।

रागघ्नो रागशमनो लंबकाश्यभिषिञ्चनः।
सहस्रदलगर्भस्थः चंद्रिकाद्रवसंयुतः।।७५।।

अंतनिष्ठो महाबुद्धिःप्रदाता नीतिवित्प्रियः।
नीतिकृन्नीतिविन्नीतिरंतर्याग-स्वयंसुखीन् ।।७६।।

विनीतवत्सलो नीतिस्वरूपो नीतिसंश्रयः।
स्वभावो यंत्रसंचारस्तन्तुरूपोऽमलच्छविः।।७७।।

क्षेत्रकर्मप्रवीणश्च क्षेत्रकीर्तनवर्धनः।
क्रोधजित्क्रोधनः क्रोधीजनवित् क्रोधरूपधृक्।।७८।।

विश्वरूपो विश्वकर्ता चैतन्यो यंत्रमालिकः।
मुनिध्येयो मुनित्राता शिवधर्मधुरन्धरः।।७९।।

धर्मज्ञो धर्मसम्बन्धो ध्वांतघ्नो ध्वांतसंशयः।
इच्छा-ज्ञान-क्रियातीत-प्रभावः पार्वतीपतिः।।८०।।

हं हं हं हं लतारूपः कल्पनावांछितप्रदः।
कल्पवृक्षः कल्पनस्थः पुण्यश्लोकप्रयोजकः।।८१।।

प्रदीप-निर्मल-प्रौढ परमः परमागमः।
ओं ज्रं ज्रं ज्रं सर्वसंक्षोभ सर्वसंहारकारकः।।८२।।

क्रोधदः क्रोधहाः क्रोधी जनहा क्रोधकारणः।
गुणवान् गुणविच्छ्रेष्ठो वीर्यविद्वीर्यसंश्रयः।।८३।।

गुणाधारो गुणाकारः सत्व-कल्याणदेशिकः।
सत्वरः सत्वविद्धायः सत्य-विज्ञान-लोचनः।।८४।।

''ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं क्लीं श्रीं ब्लू प्रों [१]ओं ह्रीं क्रों हुं फट् स्वाहा''।।

वीर्याकारो वीर्यकरच्छंनमूलो महाजयः।
अविच्छिन्न-प्रभावश्री वीर्यहा वीर्यवर्धकः।।८५।।

कालवित्कालकृत्कालो बलप्रमथनो बली।
छिन्नपापश्छिन्नपाशो विच्छिन्नभययातनः।।८६।।

मनोन्मनो मनोरूपो विच्छिन्नभयनाशनः।
विच्छिन्नसंगसंकल्पो बलप्रमथनो बलः।।८७।।

विद्याप्रदाता विद्येशः शुद्धबोधः सदोदितः।
शुद्धबोधो विशुद्धात्मा विद्यामात्रैकसंश्रय।।८८।।

शुद्धसत्वो विशुद्धांतविद्यावेद्यो विशारदः।
गुणाधारो गुणाकारः सत्त्वकल्याणदेशिकाः।।८९।।

सत्वरः सत्वसद्भावः सत्वविज्ञानलोचनः।
वीर्यवान्वीर्यविच्छ्रेष्ठः सत्वविद्यावबोधकः।।९०।।

---

१. आं

अविनाशो निराभासः विशुद्धज्ञानगोचरः।
"ॐ ह्रीं श्रीं ऐं सौः शिवं कुरु कुरु स्वाहा।
संसार-यंत्र-वाहाय महायंत्रप्रवर्तिने।।९१।।

नमः श्री-व्योम-सूर्याय मूर्ति वैचित्र्यहेतवे"।
जगज्जीवो जगत्प्राणो जगदात्मा जगद्गुरुः।।९२।।

आनंदरूप-नित्यस्थः प्रकाशानन्दरूपकः।
योग-ज्ञान-महाराजो योगज्ञान-महाशिवः।।९३।।

अखंडानंददाता च पूर्णानंद-स्वरूपवान्।
"वरदायाविकाराय सर्वकारणहेतवे।।९४।।

कपालिने करालाय पतये पुण्यकीर्तये।
अघोरायाग्निनेत्राय दंडिने घोररूपिणे।।९५।।

भिषग्गण्याय चंडाय अकुलीशाय शंभवे।
हुं क्षुं रूं क्लीं सिद्धाय नमः"।
[1]घंडारवः सिद्धगंडो गजघंटा-ध्वनिप्रियः।।९६।।

गगनाख्यो गजावासो गरलांशो गणेश्वरः।
सर्वपक्षि-मृगाकारः सर्वपक्षिमृगाधिपः।।९७।।

चित्रो विचित्रसंकल्पो विचित्रो विशदोदयः।
निर्भवो भवनाशश्च निर्विकल्पो विकल्पकृत्।।९८।।

कक्षाविसलकः कर्त्ता कोविदः काश्मशासनः।
[2](शुद्धबोधो विशुद्धात्मा विद्यामात्रैकसंश्रयः।।९९।।

शुद्धसत्वो विशुद्धांत-विद्या-वैद्यो विशारदः।)
प्रलयानलकृद्धव्यः प्रलयानलशासनः।।१००।।

---

१. घण्टारवः २. श्लोक-पाद पुनरुक्ति ८८,८९

त्रियम्बकोऽरिषड्वर्गनाशको धनदः प्रियः।
अक्षोभ्यः क्षोभरहितः क्षोभदः क्षोभनाशकः।।१०१।।

"ओं प्रां प्रीं प्रूं प्रै प्रौ प्रः मणिमंत्रौषद्यादीनां शक्तिरूपाय शंभवे अप्रमेयाय देवाय वषट् स्वाहा स्वधात्मने"।।१०२।।

द्यौर्मूर्धा-दशदिग्वाहुश्चसूर्याग्निलोचनः ।
पातालांघ्रिरिलाकुक्षिः खंमुखो गगनोदरः।।१०३।।

कलानादः कलाबिंदुः कलाज्योतिः सनातनः।
अलौकिकः कलोदारः कैवल्यपददायकः।।१०४।।

कौल्यः कुलेशः कुलजः कविः कर्पूरभास्वरः।
कामेश्वरः कृपासिंधुः कुशलः कुलभूषणः।।१०५।।

कौपीनवसनः कांतः केवलः कल्पपादपः।
कुन्देन्दु-शंखधवलो भस्मोद्धूलितविग्रहः।।१०६।।

भस्माभरणहृष्टात्मा तुष्टः पुष्टोऽरिषूदनः
स्थाणुर्दिगंबरो भर्गो भगनेत्रभिदुज्ज्वलः।।१०७।।

त्रिकाग्निकालः कालाग्निरद्वितीयो महाशयाः।
सामप्रियः सामकर्ता सामगः सामगप्रियः।।१०८।।

धीरो दांतो महाधीरो धैर्यदो धैर्यवर्धकः।
लावण्यराशिः सर्वज्ञः सुबुद्धिर्बुद्धिमद्वरः।।१०९।।

तारणाश्रयरूपस्थस्तारणाश्रयदायकः ।
तारकस्तारकस्वामी तारणस्तारणप्रियः।।११०।।

एकतारो द्वितारश्च तृतीयो मंत्र-आश्रयः।
एकरूपश्चैकनाथो बहुरूपः स्वरूपवान्।।१११।।

लोकसाक्षी त्रिलोकेशस्त्रिगुणातीतमूर्तिमान्।
बालस्तारुण्यरूपस्थो वृद्धरूपप्रदर्शकः।।११२।।

अवस्थात्रय-भूतस्थो अवस्था-त्रयवर्जितः।
वाच्य-वाचक-भावार्थो वाक्यार्थप्रियमानसः।।११३।।

ओऽसौ वाक्यप्रमाणस्थो महावाक्यार्थबोधकः।
परमाणु प्रमाणस्थः कोटिब्रह्माण्डनायकः।।११४।।

"ओं हं हं हं हं ह्रीं वामदेवाय नमः"

कक्षवित्पलकः कर्ता कोविदः कामशासनः।
कपर्दी केसरी कालः कल्पनारहिताकृतिः।।११५।।

खं खेलः खेचरः ख्यातः खन्यवादी खमुन्नतः।
खांबरः खंडपरशुः खचक्षुः खड्गलोचनः।।११६।।

अखंडब्रह्म खंडश्रीरखंडज्योतिरव्ययः।
षट्चक्रखेलनः स्रष्टा षट्ज्योति-षट्गिरार्चितः।।११७।।

गरिष्टो गोपतिर्गोप्ता गंभीरो ब्रह्मगोलकः।
गोवर्धनगतिर्गोविद् गवातीतो गुणाकारः।।११८।।

गंगाधरोऽङ्गसंगम्यो गैकारो गट्करागमः।
कर्पूरगौरो गौरीशो गौरी-गुरु-गुहाशयः।।११९।।

धूर्जटिः पिंगलजटो जटामंडलमण्डितः।
मनोजवो जीवहेतुरंधकासुरसूदनः।।१२०।।

लोकबन्धुः कलाधारः पाण्डुरः प्रमथाधिपः।
अव्यक्तलक्षणो योगी योगीशो योगिपुंगवः।।१२१।।

भूतावासो जनावासः सुरावासः सुमंगलः।
भववैद्यो योगिवैद्यो योगीसिंहहृदासनः।।१२२।।

युगावासो युगाधीशो युगकृद्युगवन्दितः।
किरीटलेटिबालेन्दु मणिकंकणभूषितः।।१२३।।

रत्नांगरागो रत्नेशो रत्नरंजितपादुकाः।
नवरत्नगुणोपेत किरीटो रत्नकञ्चुकः।।१२४।।

नानाविधानेकरत्नलसत्कुण्डलमंडितः ।
दिव्यरत्नगणोत्कीर्ण कंठाभरणभूषितः ।।१२५।।

नवफालामणिर्नासापुटभ्राजित-मौक्तिकः ।
रत्नांगुलीयविलसत्करशाखा-नखप्रभः ।।१२६।।

रत्नभ्राजद्धेमसूत्र-लसत्कटितटः पटुः।
वामांगभागविसत्पार्वती-वीक्षणःप्रियः ।।१२७।।

लीलाविलंबितवपुर्भक्तमानसमंदिरः ।
मंद-मंदार-पुष्पौघ-लसद्वायुनिषेवितः ।।१२८।।

कस्तूरी विलसत्फालोदिव्यवेषविराजितः।
दिव्यदेहप्रभाकूट-संदीपित-दिगंतरः ।।१२९।।

देवासुरगुरुस्तव्यो देवासुरनमस्कृतः।
हंसराजः प्रभाकूट-पुण्डरीकनिभेक्षणः।।१३०।।

सर्वाशाहगुणोमयः सर्व-लोकेष्ट-भूषणः।
सर्वेष्टदाता सर्वेष्टस्फुरन्मंगलविग्रहः।।१३१।।

अविद्यालेशरहितो नानाविद्यैकसंश्रयः।
मूर्तिभावत्कृपापूरो भक्तेष्टफलपूरकः।।१३२।।

सम्पूर्णकामः सौभाग्यनिधिः सौभाग्यदायकः।
हितैषी हितकृत्सौम्यः परार्थैकप्रयोजकः।।१३३।।

शरणागत दीनार्तपरित्राणपरायणः।
विष्वंचिता वषट्कारो भ्राजिष्णुर्भोजनंहविः।।१३४।।

भोक्ता भोजयिता जेता जितारिर्जितमानसः।
अक्षरः कारणो रिद्धः शमदः शारदाप्लवः।।१३५।।

आज्ञापकश्च गंभीरः कविर्दुस्वप्ननाशनः।
पंचब्रह्मसमुत्पत्तिः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः।।१३६।।

व्योमकेशो भीमवेषो गौरीपतिरनामयः।
भवाब्धितरणोपायोभगवान्भक्तवत्सलः ।।१३७।।

वरो वरिष्ठ-तेजिष्ठः प्रियाप्रियवधः सुधीः।
यंताऽयविष्ठः क्षोदिष्टो यविष्ठो यमशासनः।।१३८।।

हिरण्यगर्भो हेमांगो हेमरूपो हिरण्यदः।
ब्रह्मज्योर्तिनावेक्ष्यश्चामुण्डाजनको रवि।।१३९।।

मोक्षार्थीजनकः सेव्यो मोक्षदो मोक्षनायकः।
महाश्मशान-निलयो वेदाश्वाभुरथस्थिरः।।१४०।।

मृगव्याधो धर्मधामप्रच्छन्नस्फटिकःप्रभुः।
सर्वज्ञः परमात्मा च ब्रह्मसदाशिवः।।१४१।।

शरभेशो महादेवः परब्रह्मसदाशिवः।
स्वराविकृतिकर्तार स्वरातीत स्वयंविभुः।।१४२।।

स्वर्गतः स्वर्गतिर्दाता नियंता नियताश्रयः।
भूमिरूपो भूमिकर्ता भूधरो भूधराश्रयः।।१४३।।

भूतनाथो भूतकर्ता भूतसंहारकारकः ।
भविष्यज्ञो भवत्राता भवदो भवहारकः।।१४४।।

वरदो वरदाता चं वरप्रीतो वरप्रदः।
कूटस्थः कूटरूपश्च त्रिकूटो मंत्रविग्रहः।।१४५।।

मन्त्रार्थो मंत्रगम्यश्च मन्त्रसो मन्त्रभागकः।
सिद्धिमंत्र सिद्धिदाता जपसिद्धिः स्वभावकः।।१४६।।

नामातिगो नामरूपो नामरूपगुणाश्रयः।
गुणकर्ता गुणत्राता गुणातीता गुणारिहा।।१४७।।

गुणग्रामो गुणाधीशः गुणनिर्गुणकारकः।
अकार-मातृकारूपो अकारातीतभावनः।।१४८।।

परमैश्वर्यदाता च परमप्रीतीदायकः।
परमः परमानन्दः परानन्दः परात्पराः।।१४९।।

वैकुण्ठपीठमध्यस्थो वैकुण्ठो विष्णुविग्रहः।
कैलाशवासी कैलाशः शिवरूपः शिवप्रदः।।१५०।।

जटाजूटो भूषितांगो भस्म-धूसरभूषणः।
दिग्वाससो दिग्विभागो दिगंतरनिवासकः।।१५१।।

ध्यानकर्ता ध्यानमूर्तिर्धारणाधारणप्रियः।
जीवन्मुक्तिपुरीनाथो द्वादशांतस्थितप्रभुः।।१५२।।

तत्त्वस्थस्तत्त्वरूपस्थस्तत्त्वातीतोऽति-तत्वतः।
तत्त्वासाम्यस्तत्त्वगम्यस्तत्त्वार्थसर्वदर्शकः।।१५३।।

तत्त्वासनस्तत्त्वमार्गस्तत्वांतस्तत्वविग्रहः ।
दर्शनादतिगो दृश्यो दृश्यातीतोऽतिर्शकः।।१५४।।

दर्शनो दर्शनातीतो भावनाकाररूपकृत्।
मणिपर्वतसंस्थानो मणिभूषणभूषितः।।१५५।।

मणिप्रीतो मणिश्रेष्ठो मणिस्थो मणिरूपकः।
चिंतामणिगृहांतस्थः सर्वचिंताविवर्जितः।।१५६।।

चिंताक्रांतो भक्तचिंत्यो चिंतनाकार-चिंतकः।
अचिंत्यश्चिन्त्यरूपश्च निश्चिन्त्यो निश्चयात्मकः।।१५७।।

निश्चयो निश्चयाधीशो निश्चयात्मकदर्शकः।
त्रिविक्रमस्त्रिकालज्ञस्त्रिमूर्तिस्त्रिपुरान्तकः।।१५८।।

ब्रह्मचारी व्रतप्रीतो गृहस्थो गृहवासकः।
परमधाम परमब्रह्म परमात्मा परात्परः।।१५९।।

सर्वेश्वरः सर्वमयः सर्वसाक्षी विलक्षणः।
मणिद्वीपो द्वीपनाथो द्वीपांतो द्वीपलक्षणः।।१६०।।

सप्तसागरकर्ता च सप्तसागरनायकः।
महीधरो महीभर्ता महीपालो मनस्विनः।।१६१।।

महीव्याप्तो व्यक्तरूपः सुव्यक्तो व्यक्तभावनः।
सुवेषाढ्य सुखप्रीतः सुगमः सुगमाश्रयः।।१६२।।

तापत्रयाग्निसन्तप्त समाह्लादन-चन्द्रमाः।
तारणस्तापसाराध्यस्तनुमध्यस्तमोमहः ।।१६३।।

पररूपः परध्येयः परदैवतदैवतः।
ब्रह्मपूज्यो जगत्पूज्यो भक्तपूज्यो वरप्रदः।।१६४।।

अद्वैतो द्वैतचित्तश्च द्वैतोऽद्वैतविवर्जितः।
अभेद्यः सर्वभेद्यश्चभिद्यभेदकवेधकः।।१६५।।

लाक्षारसः सुवर्णाभः प्लवंगमप्रियोत्तमः।
शत्रूसंहारकर्ता च अवतारपरो हरः।।१६६।।

संविदेशः संविदात्मा संविज्ञानप्रदायकः।
संवित्कर्ता च भक्तश्च संविदानंदरूपवान्।।१६७।।

संज्ञायातीत संहार्या सर्वसंशयहारकः।
निःसंशयो मनोध्येयः संशयात्मातिदूरगः।।१६८।।

शैवमंत्र शिवप्रीत दीक्षा शैवस्वभावकः।
भूपतिः क्ष्माकृतो भूपो भूपभूपत्वदायकः।।१६९।।

सर्वधर्मसमायुक्त सर्वधर्मविवर्धकः।
सर्वशास्त्रः सर्ववेदा सर्ववेता सतृप्तिमान।।१७०।।

भक्तभावावतारश्च भुक्ति-मुक्ति-फलप्रदः।
भक्त-सिद्धांर्थ-सिद्धिश्च सिद्धि-बुद्धि-प्रदायकः।।१७१।।

वारणसी-वासदाता वाराणसीवरप्रदः।
वाराणसीनाथरूपो गंगामस्तकधारकः।।१७२।।

पर्वताश्रयकर्ता च लिंग-पर्वत-त्र्यंबकः।
लिंग-देहो लिंगपतिलिङ्गपूज्योऽतिदुर्लभः।।१७३।।

रुद्रप्रियो रुद्रसेव्य उग्ररूप विराङ्कृत्।
मालारुद्राक्षभूषांगो जपरुद्राक्षतोषकः।।१७४।।

सत्यसत्यः सत्यदाता सत्यकर्ता सदाश्रयः।
सत्यसाक्षी सत्यलक्ष्मी लक्ष्म्यातीतमनोहरः।।१७५।।

जनको जगताधीशो जनिता जननिश्चयः।
सृष्टिस्थितः सृष्टिरूपी सृष्टिरूपस्थितिप्रदः।।१७६।।

संहाररूपः कालाग्निः कालसंहाररूपकः।
सप्तपाताल-पादस्थो महदाकाश-शीर्षवान्।।१७७।।

अमृतो अमृताकारो अमृतामृतरूपकः।
अमृताकारचित्तिस्थ अमृतोद्भवकारणः।।१७८।।

अमृताहारनित्यस्थस्त्वमृतोद्भवरूपिणः ।
अमृतांशोऽमृताधीशोऽमृतप्रीतिविवर्धनः ।।१७९।।

अनिर्देश्यो अनिर्वाच्यो अनंगो अंग-आश्रयः।
श्रेयदः श्रेयरूपश्च श्रेयातीतफलोत्तमः।।१८०।।

सारः संसारसाक्षिश्च सारासारविचक्षणः।
धारणातीतभावस्थो धारणान्वयगोचरः।।१८१।।

गोचरो गोचरातीतो अतीवप्रियगोचरः।
प्रिय-प्रिय तथा स्वार्थी स्वार्थः अर्थफलप्रदः।।१८२।।

अर्थार्थसाक्षी लक्षांशो लक्ष्यलक्षणविग्रहः।
जगदीशो जगत्त्राता जगन्मयोजगद्गुरुः।।१८३।।

गुरुमूर्तिः स्वयंवेद्यो वेद्यवेदकरूपकः।
रुपातीतो रूपकर्ता सर्वरूपार्थदायकः।।१८४।।

अर्थदस्त्वर्थमान्यश्च अर्थार्थी अर्थदायकः।
विभवो वैभवः श्रेष्ठः सर्ववैभवदायकः।।१८५।।

चतुःषष्टि-कलासूत्र चतुःषष्टिकलामयः ।
पुराणश्रवणाकारः पुराणपुरुषोत्तमः।।१८६।।

पुरातन-पुराख्यातः पूर्वजः पूर्वपूर्वकः।
मन्त्रतन्त्रार्थसर्वज्ञः सर्वतन्त्र प्रकाशकः।।१८७।।

तन्त्रवेता तन्त्रकर्ता तन्त्रातरनिवासकः।
तन्त्रगम्यस्तंत्रमान्यसतन्त्रयन्त्रफलप्रदः ।।१८८।।

सर्वतंत्रार्थतत्वज्ञस्तंत्रराजः स्वतन्त्रकः।
ब्रह्माण्डकोटिकर्ता च ब्रह्माण्डोदरपूरकः।।१८९।।

ब्रह्माण्डदेशदाता च ब्रह्मज्ञान परायणः।
स्वयंभूः शम्भुरूपश्च हंसविग्रह निस्पृहः।।१९०।।

श्वास-निःश्वास-उच्छ्वासः-सर्वसंशय हारकः।
सोऽहंरूप स्वभावश्च सोऽहं-रूप-प्रदर्शकः।।१९१।।

सोऽहमस्मीति नित्यस्थः सोऽहं-हंसः-स्वरूपवान्।
हंसोहंसः-स्वरूपश्च हंसविग्रह-निस्पृहः।
श्वास-निश्वास-उच्छ्वासः-पक्षिराजो निरंजनः।।१९२।।

अष्टाधिकसहस्त्रंतु नाम साहस्त्रमुत्तमम्।
नित्यं संकीर्तनासक्तः कीर्तयेत्पुण्यवासरे।।१९३।।

संक्रान्तौ विषुवे चैव पौर्णिमास्यां विशेषतः।
अमावस्यां रविवारे त्रिःसप्तवारपाठकः।।१९४।।

स्वप्ने दर्शनमाप्नोति कार्याकार्येऽपिदृश्यते।
रविवारे दशावृत्या रोगनाशो भविष्यति।।१९५।।

सर्वदा सर्वकामार्थी जपेदेतत्तु सर्वदा।
यस्य स्मरण मात्रेण वैरिणां-कुलनाशनम्।।१९६।।

भोग-मोक्षप्रदं श्रेष्ठं भुक्ति-मुक्ति-फलप्रदम्।
सर्वपापप्रशमनं सर्वापस्मारनाशनम्।।१९७।।

राजचौरारि-मृत्यूंना-नाशनं जयवर्धनम्।
मारणे सप्तरात्रं तु दक्षिणाभिमुखो जपेत्।।१९८।।

उदङ्मुख सहस्त्रं तु रक्षणाय जपेन्निशि।
पठतां श्रृण्वतां चैव सर्वदुःखविनाशकृत्।।१९९।।

धन्यं यशस्यमायुष्यमारोग्यं पुत्रवर्धनम्।
योगसिद्धिप्रदं सम्यक् शिवं ज्ञानप्रकाशितम्।।२००।।

शिवलोकैकसोपानं वांछितार्थैकसाधनम्।
विष-ग्रह-क्षयकरं पुत्रपौत्राभिवर्धनम्ः।।२०१।।

सदा दुःस्वप्नशमनं सर्वोत्पातानिवारणम्।
यावन्न दृश्यते देवि शर्वभो भयनाशकः।।२०२।।

तावन्न दृश्यते जाप्यं वृहदारण्यको भवेत्।
सहस्त्रनाम नाम्न्यस्मिन्नेकैकोच्चारणात्पृथक्।।२०३।।

स्नातो भवति जाह्नव्यां दिव्यां दृष्टिः स्थिरो भुवि।
सहस्त्रनाम सद्विद्यां शिवस्य परमात्मनः।।२०४।।

यो निष्ठास्यति कल्पान्ते शिवकल्पो भविष्यति।
हिताय सर्वलोकानां शरभेश्वर भाषितम्।।२०५।।

स ब्रह्म स हरिःसोऽर्कः स शक्रो वरुणो यमः।
धनाध्यक्ष स भगवान् सचैकः सकलं जगत्।।२०६।।

सुखाराध्यो महादेवस्तपसा येन तोषितः।
सर्वदा सर्वकामार्थ जपेत्सिध्यति सर्वदा।।२०७।।

धनार्थी धनमाप्नोति यशोर्थी यशमाप्नुयात्।
निष्कामः कीर्तयेन्नित्यं ब्रह्मज्ञानमयो भवेत्।।२०८।।

विल्वैर्वा तुलसीपुष्पैश्चंपकैर्वकुलादिभिः।
कल्हारैर्जातिकुसुमैरंबुजैर्वा तिलाक्षतैः।।२०९।।

एभिर्नाम सहस्त्रैस्तु पूजयेद् भक्तिमान्नरः।
कुलं तारयते तेषां कल्पे कोटिशतैरपि।।२१०।।

इति श्री आकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वरसम्वादे
श्री मच्छरभ-सहस्त्रनाम-स्तोत्रं

शरभ हृदयम्

।। श्री देव्युवाच ।।

भगवन्देवदेवेश सर्वशास्त्रार्थवादक।
ब्रू हि मे सर्वपापघ्नं किं मन्त्रमिष्टकामदम्।।१।।

केन पुण्यप्रभावेन शत्रूणां प्राणनाशनम्।
सर्वपापप्रशमनं धनमायुष्यवर्धनम्।
ब्रूहि मे कृपया शम्भो त्वत्पादकमलं नमः।।२।।

।। ईश्वर उवाच ।।

श्रृणु वक्ष्यामि देवेशि सर्वपापहरं परम्।।३।।
सर्वशत्रुहरं दिव्यं हृदयं शरभस्य च।
सालुवं सर्वरोगघ्नं हृदयं परमाद्भु तम्।।४।।
गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं गोपनीयं प्रयत्नतः।
पुरा नारायणः श्रीमान् क्षीराब्धौ मथनं ततः।।५।।
तस्य प्रारंभसमये हृदयं शरभस्य च।
प्रातः कालेऽजपन्नित्यं विंशदावर्त्तिकं मुदा।।६।।
एवं मासत्रयं कृत्वा प्रादुर्बभूव सालुवः।
तस्य सोदंडवद्भूमौ प्रणम्य च पुनः पुनः।।७।।
तमुत्थाप्य महातेजा मूर्ध्न्यु पाघ्राय सालुवः।
संतुष्टः प्रत्युवाचेदं निर्विघ्नेनामृतं भवेत्।।८।।

इत्युक्त्वा प्रददौ तस्मै रक्षणं सर्वविश्वकम्।
ततो नारायणो देवः प्रणमानोऽब्रवीद्वचः।।९।।

।। नारायण उवाच ।।

देव देव महादेव पक्षिराज महाप्रभो।
हृदयं तव देवेश तस्य को वा ऋषिर्वद।।१०।।
छंदः किं बीजशक्ति च किं फलं वद मे प्रभो।

।। श्री शरभेश्वर उवाच ।।

श्रृणु वक्ष्याम्यहं विष्णो हृदयं मम सालुवम्।।११।।

सर्वपापक्षयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
सर्वक्लेशविनाशं च सर्वसंतोषकारणम्।।१२।।

सर्वसौभाग्यदं शान्तम् सर्वमंगलवर्धनम्।
ऋषिः कालाग्निरुद्रस्तु जगती छंद ईरितम्।।१३।।

खं बीजं च महं देव शक्तिः स्वाहेत्युदीरितम्।
कीलकं नम इत्याहुरिष्टार्थे विनियोगकम्।।१४।।

मूल-न्यासादिकं कृत्वा ध्यायेच्छरभ सालुवम्।
प्रथमं पक्षिराजं चं द्वितीयं शरभं तथा।।१५।।

तृतीयं सालुवं प्रोक्तं चतुर्थं लोकनायकम्।
पंचमं रेणुकानाथं षष्ठं कालाग्निरुद्रकम्।।१६।।

सप्तमं नारासिंहारिमष्टमं विश्वमोहनम्।
श्रीं ह्रीं क्लीं नवमं चैव हुं हुं हुं दशमं तथा।।१७।।

क्लीं ह्रीं क्लामेकादशं च द्वादशं सर्वमंत्रवित्।
त्रयोदशं तु यंत्रेशं चतुर्दशं महाबलः।।१८।।

पंचदशं पापनाशं षोडशं च करालकम्।
सप्तदशं महारौद्रं भीममष्टादशं तथा।।१९।।

एकोनविंशं सांबं च विंशं च शंकरं तथा।
विंशोत्तरैकं सर्वेशं द्वाविंशं पार्वतीपतिम्।।२०।।

त्रयोविंशं च हूं हूं हूं चतुर्विंशमनन्तकम्।
पंचविंशं वृषारूढं षडविंशं विश्वलोचनम्।।२१।।

त्रिलोचनं सप्तविंशमष्टाविंशं खगेन्द्रकम्।
पं पं पं नवविंशं च त्रिंशं भुजगभूषणम्।।२२।।

एकत्रिंशं च लं लं लं द्वात्रिंशं पंचवक्त्रकम्।
त्रयस्त्रिंशं च आनंदं चतुस्त्रिंशं परात्परम्।।२३।।

पंचत्रिंशं च भं भं भं षट्त्रिंशं शत्रुनाशनम्।
सप्तत्रिंशं स्वयंभूजं विश्वेशं अष्ट त्रिंशकम्।।२४।।

शूलपाणिं नवत्रिंशं चत्वारिंशं कलाधरम्।
एकचत्वारिंशं सं सं (सं) द्विचत्वारिंश हंसकम्।।२५।।

एतद् हृदयमायुष्यं मन्त्र सर्वार्थसाधकम्।
अनेकरत्नलंवानी जटा-मुकुटधारिणम्।।२६।।

अनेकरत्नसंयुक्तं सुवर्णाचित्तमौलिनम्।
तक्षकादि-महानाग-कुण्डलद्वय-शोभितम् ।।२७।।

त्रि पंचनयनं पंचवक्त्र-तुंडधरं प्रभुम्।
करालं भृकुटीभीमं शंखतुल्य-कपोलकम्।।२८।।

कालीकलित-दुर्गा च पक्षद्वय-विराजितम्।
दशायुधधरं दीप्तं दशबाहुं त्रिलोचनम्।।२९।।

नीलकण्ठधरं भोग-सर्पहारोपशोभितम्।
विशालवक्षः विश्वेशं विश्वमोहनमव्ययम्।।३०।।

त्रिपुरारिं त्रिशूलादिधारिणं मृगधारणम्।
व्याघ्रचर्माम्बरधरं वाडवाग्निस्थितोदरम्।।३१।।

मृत्यु-व्याधिस्थितोरुं चं वज्र-जानुप्रदेशकम्।
पादपंकजयुग्मं च तीक्ष्णवज्र-नखाग्रकम्।।३२।।

झणि-नूपुर-मंजीरझणत्किंकिणि-जंघकम्।
वज्रतुण्ड-महादीप्तं कालकालं कृपानिधिम्।।३३।।

एवं ध्यात्वा च हृदयं त्रिंशदावृतिकं क्रमात्।
नित्यं जप्त्वा सालुवेशं हृदयं सर्वकामदम्।।३४।।

सर्वपुण्यफलश्रेष्ठं सर्वशत्रूविनाशनम्।
सर्वरोगहरं दिव्यं भजतां पापनाशनम्।।३५।।

इहैव सकलान्भोगानंते शिवपदं व्रजेत्।
इत्युक्त्वान्तर्दधे देवः शरभः पक्षिराजकः।।३६।।

ततो नारायणो ध्यात्वा श्रुत्वा रूपं च विस्मितः।
एतत्ते कथितं देवि हृदयं शरभस्य च।
पठतां श्रृण्वतां चैव सर्वमन्त्रार्थसिद्धिदम्।।३७।।

इति श्री आकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे उमामहेश्वर सम्वादे
शरभहृदयं

चित्र-माला (१)

।। श्रीशिव उवाच ।।

चित्रमालां प्रवक्ष्यामि शीघ्रसिद्धिप्रदायिनीम्।
सर्वसौभाग्यदां तुर्यां चतुर्वर्गफलप्रदाम्।।१।।

आकाशभैरवस्यास्य मन्त्रस्यानंदभैरवः
ऋषिः छन्दस्तु गायत्री देवताकाशभैरवः।।२।।

ह्रींकारं बीजमित्युक्तं हुङ्कारं शक्तिरुच्यते।
सर्वाभीष्टार्थसिध्यर्थे विनियोगस्तु मायया।।३।।
करांगन्यासजालानि क्रमात्कृत्वाथः भावयेत्।
सहस्त्रपाणिपद्वक्त्रं सहस्त्रत्रयलोचनम्।।
सर्वाभीष्टप्रदं देवं स्मरेदाकाशभैरवम्।।४।।

ओं नमो भगवते आकाशभैरवाय निखिललोकप्रियाय-प्रणत जन-परिताप-विमोचनाय, सकल भूत निवारणाय सर्वाभीष्टप्रदाय नित्याय सच्चिदानंदविग्रहाय, सहस्त्रबाहवे सहस्त्रमुखाय सहस्त्र त्रिलोचनाय सहस्त्र चरणाय करालाय अखिलरिपु-संहारकारणाय, अनेक-कोटि-ब्रह्म-कपाल मालालंकृताय नररुधिरमांसभक्षणाय महाबलपराक्रमाय महदन्तराय, विषमोचनाय पर -मंत्र-यंत्र-तंत्र-विद्या-विछेदनाय प्रसन्नवदनाम्बुजाय एह्येहि आगच्छागच्छ, ममाभीष्टमाकर्षयाकर्षय आवेशयावेशय मोहय मोहय भ्रामय भ्रामय द्रावय द्रावय तापय तापय सिद्धय सिद्धय बंधय बंधय भाषय भाषय क्षोभय क्षोभय भूतप्रेतादि पिशाचान्मर्दय भूतप्रेतादि पिशाचान्मर्दय

कुर्दय कुर्दय पाटय पाटय मोटय मोटय गुंफय गुंफय कंपय कंपय ताडय ताडय त्रोटय त्रोटय भेदय भेदय छेदय छेदय चंडवातातिवेगाय संतत-गंभीर-विजृम्भणाय, संकर्षय संकर्षय संक्रामय संक्रामय प्रवेशय प्रवेशय स्तोभय स्तोभय स्तंभय स्तंभय तोदय तोदय खेदय खेदय तर्जय तर्जय गर्जय गर्जय नादय नादय रोदय रोदय घातय घातय वेतय वेतय सकल-रिपु-जनान्छिन्धि सकल-रिपु-जनान्छिन्धि भिन्दय भिन्दय अंधय अंधय रुंधय रुंधय नर्दय नर्दय बंदय बंदय श्रीं ह्रीं क्लीं कल्याणकारणाय श्मशानानंदमहाभोगप्रियाय देवदत्तं आनय आनय दूनय दूनय केलय केलय मेलय मेलय प्रपन्न वत्सलाय प्रतिवदन-दहनामृत-किरणनयनाय सहस्त्रकोटि-वेताल-परिवृत्ताय मम रिपूनुच्चाटयोच्चाटय नेपय नेपय, तापय तापय सेचय सेचय मोचय मोचय लोटय लोटय स्फोटय स्फोटय ग्रहण ग्रहण अनंत-वासुकि-तक्षक-कर्कोटक-पद्म-महापद्म-शंख-गुलिक-महानाग-भूषणाय, स्थावर-जंगमानां विषं नाशय नाशय प्राशय प्राशय भस्मीकुरु भस्मीकुरु भक्तजनवल्लभाय सर्गस्थितिसंहारकारणाय, कथय कथय सर्व शत्रून् उद्रेकय उद्रेकय विद्वेषय विद्वेषय उत्सादय उत्सादय उत्पाटय उत्पाटय बाधय बाधय साधय साधय दह दह पच पच शोषय शोषय पेषय पेषय दूरय दूरय मारय मारय भक्षय भक्षय शिक्षय शिक्षय समस्तभूतं शिक्षय शिक्षय श्रीं ह्रीं क्लीं क्ष्म्रयैं अनवरत-तांडवाय आपदुद्धारणाय साधुजनान् तोषय तोषय भूषय भूषय पालय पालय शीलय शीलय काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य शमय शमय दमय दमय त्रासय त्रासय शासय शासय क्षिति-जल-दहन-मारुत-गगन-तरणि-सोमात्मशरीराय शम-दमोपरति तितिक्षा समाधान श्रद्धां दापय दापय प्रापय प्रापय विघ्न विच्छेदनं कुरु कुरु रक्ष रक्ष क्ष्म्रयैं क्लीं ह्रीं श्रीं ब्रह्मणे स्वाहा।

इति गोप्यं महामन्त्रम् परमाकाशभैरवम्।
यस्य स्मरणमात्रेण नंदंत्यखिलदेवताः।।५।।
शतवारमिमं मन्त्रम् जपेत्सर्वार्थसिद्धये।
त्रिवारं कार्यसिध्यर्थं जपेदेकाग्रमानसः।।६।।
प्रथमं तु त्रिधा मृश्य गुरुं स्वेष्टां यदा स्मरेत्।
तत्काम्यसिद्धये शक्तौ जुहुयात्स्वात्मपावके।।७।।

इति श्री आकाशभैरवकल्पे प्रत्यक्षसिद्धिप्रदे
उमामहेश्वरसम्वादे चित्र मालामन्त्रम्

शरभ माला मंत्र (२)

।। श्री शिव उवाच ।।

माला-मन्त्रम् प्रवक्ष्यामि रहस्यं श्रृणु शोभने।
मन्त्रम्-स्मरण-मात्रेण करस्थाः सर्वसिध्दयः।।१।।

ओं नमः पक्षिराजाय निशि-कुलिश-वर-दंष्ट्रा-नखायानेक-कोटि-ब्रह्म-कपाल-मालालंकृताय सकल-कुल-महानागभूषणाय सर्वभूतनिवारणाय नृसिंह-गर्व-निर्वापण-कारणाय सकलरिपु रंभाटवी-विमोटन-महानिलाय-शरभ-सालुवाय ह्रां ह्रीं ह्रूं प्रवेशय प्रवेशय रोग-ग्रहं बन्धय बन्धय बालग्रहं बन्धय बन्धय आवेशय आवेशय भाषय भाषय मोहय मोहय कंपय कंपय बंधय बंधय भूतग्रहं बंधय रोगग्रहं बंधय यक्षग्रहं बंधय पातालग्रहं बंधय चातुर्थग्रहं बंधय भीमग्रहं बंधयापस्मार ग्रहं बंधय उन्मत्तग्रहं बंधय राक्षसग्रहं बंधय ग्रहम्बन्धय ज्वाला मुखग्रहं बंधय तमोहारग्रहं बंधय भूचरग्रहम् बंधय खेचरग्रहं बंधय बेतालग्रहं बंधय कूष्माण्डग्रहं बंधय स्त्रीग्रहं बंधय पापग्रहं बंधय विक्रमग्रहं बंधय व्युत्क्रमग्रहं बंधय प्रेतग्रहं बंधय पिशाचग्रहं बंधयावेशग्रहं बंधय अनावेशग्रहं बंधय सर्वग्रहान्मर्दय सर्वग्रहान् त्रोटय त्रोटय प्रैं त्रैं हैं मारय शीघ्रं मारय मुंच मुंच दह दह पच पच नाशय नाशय सर्वदुष्टान्नाशय ह्रुं फट् स्वाहा।

अरुणमरुणमालालंकृता संकराग्रै-र्विधृत-परशु-
शक्तिं पुष्प-बाणेक्षु-चापम्।
विविध-फणफणीन्द्रैर्भूषणैर्भूषितांगं ।
शरभमखिलनाथं नौम्यहंसालुवेशम्।

शरभ माला मंत्र (३)

।। श्री गुरवे नमः ।।

श्री गणेशाय नमः

अथ : शरभ शाल्व पक्षिराज माला मन्त्रम् प्रारम्भ –

विनियोग – अस्य श्री चित् कलाकर्षण मन्त्रस्य, वामदेव ऋषिः जगतीः छन्दः वीर शरभो देवता, खें बीजम् ह्रीं शक्तिः, फट् कीलकम् मम सर्व शत्रु तेज आकर्षणार्थे जपे विनियोगः–

ॐ ह्रीं वीर शरभ रुद्रावताराय रौद्रति धूर्ण नेत्र त्रयाय खट्वाङ्ग परशु, डमरू, धनुर्बाण, शङ्खः खड्ग, चक्र, हस्ताय ह्रीं खें खें खें वीर शरभः हरि हर मंत्राधि देवतानाम् नानाविध स्थावर देवतानाम् अष्टाष्ट कोटि भूत गणानाम् सर्व जन्तुनाम् अभीष्ट तेजो विग्रहम् मम सर्व शत्रून् केश भारय बन्धय-बन्धय

ब्रह्मणेन परमात्म शक्तिः सहितम शिर स्थानम् बन्धय-बन्धय इन्द्रेण लक्ष्मि शक्ति सहितम् करणद्वयम् बन्धय-बन्धय सोम सूर्याऽग्नि पिंगला सुषुम्णा शक्ति सहितम् नासापुटम् बन्धय-बन्धय ईक्षकोण (ईक्षेण)

सरस्वति सहितम् जिह्वाम् बंधय-बन्धय नसणेन् उदान शक्ति सहितम् कण्ठ प्रदेशं बन्धय-बन्धय कालाग्नि रुद्रेण व्यान शक्ति सहितम् सर्वाङ्गम बन्धय-बन्धय विष्णुना मनो बुद्धि-चित्तं अहंकार शक्ति सहितम्

अन्तःकरण चतुष्टयम् बन्धय-बन्धय वसुभिः इच्छा शक्ति सहितम धातुन् बन्धय-बन्धय ॐ वीर शरभाय हुँ फट्-३ स्वाहा।।